सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की हिन्दी गृहपत्रिका

सेन्ट्रल मंथन

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

• खंड 8 • अंक - 3 • सितंबर, 2023

भारत 2023 INDIA

विशेष आकर्षण- मातृभाषा

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

दिनांक 14 सितंबर 2023 को पुणे में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र के कर कमलों से भारत सरकार के प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार को ग्रहण करते हुए हमारे माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव.

सुस्वागतम

श्री महेन्द्र दोहरे ने दिनांक 09.10.2023 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कार्यपालक निदेशक के रुप में कार्यग्रहण किया.

श्री महेन्द्र दोहरे ने विपणन एवं वित्त में एमबीए एवं आईआईबीएफ से कंप्यूटर एप्लीकेशन तथा विभिन्न प्रमाणीकरण डिप्लोमा के साथ ही नेट की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स के एसोशिएट मेंबर हैं. उनके पास 24 से अधिक वर्षों का विभिन्न बैंकिंग कार्यों का समृद्ध अनुभव है. वे पीएनबी कार्ड्स एंड सर्विसेज लिमिटेड और त्रिपुरा ग्रामीण बैंक के बोर्ड में निदेशक के रुप में भी कार्य कर चुके हैं.

प्रधान संरक्षक

श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक

श्री एम. वी. मुरली कृष्णा
कार्यपालक निदेशक

श्री महेन्द्र दोहरे
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

सुश्री पॉपी शर्मा
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक

श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

श्री संजय भट्ट

सुश्री अनिता धुर्वे

श्री सुनील कुमार साव

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृह-पत्रिका
(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

प्रकाशन तिथि : 14 नवम्बर 2023 • खंड 8 • अंक - 3 • सितंबर, 2023

विषय-सूची

▶ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव का संदेश 2
▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 3
▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम.वी.मुरली कृष्णा का संदेश 4
▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश 5
▶ माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश 6
▶ संपादकीय 7
▶ मातृभाषाएँ एवं उनके बीच पुल का काम करती हिन्दी 8
▶ डिजिटल हिन्दी 10
▶ डिजिटल हिन्दी 12
▶ डिजिटल हिंदी एवं मातृभाषा 15
▶ व्यथा 16
▶ मातृभाषा 17
▶ डिजिटल हिन्दी 19
▶ परोपकार के गीत 20
▶ डिजिटल हिंदी 21
▶ डिजिटल हिंदी 22
▶ डिजिटल हिंदी 23
▶ डिजिटल हिंदी 26
▶ मातृभाषा: पहचान, संस्कृति और विरासत की सर्वोच्च चाबी 28
▶ मातृभाषा 31
▶ डिजिटल हिन्दी 33
▶ रास्ता साफ़ 35
▶ चटपटा पोहे वडा 40

ई-मेल/Email : centralmanthan@centralbank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव का संदेश

प्रिय सेंट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं वित्तीय वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही में हमारे बैंक द्वारा दर्शाए गए बेहतर कार्यपरिणामों के लिए आप सबको बधाई देता हूं. हमारे बैंक ने इस तिमाही में अब तक का सर्वाधिक लाभ अर्जित किया तथा ₹ 6 लाख करोड़ के व्यवसाय स्तर को पार कर लिया है.

भारत सरकार के प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार को प्राप्त करना हमारे बैंक के लिए एक और उपलब्धि है. इसलिए आप सभी को पुन: हार्दिक बधाई.

आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में डिजिटलीकरण का प्रभाव दिखायी पड़ रहा है. इससे कार्यनिष्पादन सरल एवं सहज बनता है. हमारा बैंक हमारी कार्य प्रणालियों के डिजिटलीकरण की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है. हमने अपने ग्राहकों के लिए नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, एम-पासबुक आदि सुविधाएं प्रदान की है. मैं गर्व से यह कहना चाहूंगा कि हमारी सभी डिजिटल सेवाएं राजभाषा हिंदी में भी उपलब्ध हैं.

सभी शाखाओं को हमारे ग्राहकों को जानने और उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पूर्णत: संवेदनशील होना चाहिए. हम ग्राहकों को जितने अधिक उत्पाद प्रदान करेंगे; उतने ही अधिक निष्ठावान ग्राहक हमारे पास होंगे.

सभी सेंट्रलाइट्स से यह आशा की जाती है कि वे हमारे परिसर में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करें. यह भी सुनिश्चित करें कि एटीएम, पासबुक प्रिंटर, कियोस्क आदि हमेशा सुचारू ढंग से कार्य करते रहें. परिसर में आने वाले व्यक्ति के साथ सभी सेंट्रलाइट सदैव शिष्ट और विनम्र व्यवहार करें, चाहे वह व्यक्ति हमारा ग्राहक हो अथवा ग्राहक न हो. आप अपने परिसर को सदैव साफ-सुथरा रखिए और अपनी शाखा में भी हमेशा अच्छा और मैत्रीपूर्ण वातावरण रखिए. याद रखिए आपकी पहचान आपके द्वारा प्रदान की गई सेवा से ही बनती है.

सर्वोत्तम ग्राहक सेवा सेवा निश्चित रूप से हमारा व्यवसाय बढ़ायेगी.

आगामी त्योहारों की शुभकामनाओं के साथ.

(एम. वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए मैं सबसे पहले सितंबर 2023 तिमाही के लिए घोषित हमारे बैंक के शानदार परिणामों के लिए तथा इस दौरान हमारे बैंक को प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव जी के कुशल नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

कंप्यूटरीकरण के इस दौर में अब बैंकिंग पूरी तरह कंप्यूटरीकृत हो चुकी है. हम अपने अधिकांश कार्य अब डिजिटल रुप में कर रहे हैं. डिजिटलीकरण के द्वारा बैंकर के रूप में हमारे कार्मिकों के साथ ही हमारे ग्राहकों को बैंकिंग का काम बहुत अधिक सुविधाजनक हो गया है.

डिजिटलीकरण के कार्य में हमने अपने ग्राहकों को हिंदी में काम करने की सुविधा भी उपलब्ध करवायी है. जैसा कि आप सभी जानते हैं कि अब सभी डिजिटल कार्य हिंदी में भी सरलतापूर्वक किए जा रहे हैं.

डिजिटल हिंदी राजभाषा नियमों और मानकों का अनुपालन करने के साथ-साथ हमारे देश के नागरिकों के लिए सुविधाजनक है.

वर्तमान वित्त वर्ष को समाप्त होने में अब कुछ ही महिनों का समय शेष रह गया है. अब आपका पूरा ध्यान बैंक के व्यवसाय वृद्धि की ओर होना चाहिए. आपका ध्यान आपको दिए गए सभी लक्ष्यों को बड़े मार्जिन के साथ प्राप्त करने की ओर होना चाहिए. आप अपनी टीम को साथ में लेकर तथा व्यवहारिक कार्य नीति बनाकर अपने सभी लक्ष्यों को प्राप्त करें.

आपके प्रयासों में सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम.वी.मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट्स,

सर्वप्रथम मैं हमारे सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव सर के सक्षम मार्गदर्शन और समुचित प्रयासों के लिए उनका अभिनंदन करता हूं जिनके नेतृत्व में हमारे बैंक ने सितंबर 2023 तिमाही में अद्भुत परिणाम दर्शाए हैं, साथ ही भारत सरकार का प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त किया.

जैसा कि आप जानते हैं कि स्वस्थ तन में स्वस्थ मन निहित होता है. बैंक ने हैबिल्ड की मदद से ऑनलाइन योग प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है. सभी स्टाफ सदस्य हमारे बैंक द्वारा प्रदान की गई इस अनूठी सुविधा का लाभ उठाएं.

इस आधुनिक युग में कंप्यूटर तथा अन्य गैजेट्स हमारे दैनिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं. वैज्ञानिकों ने हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को कंप्यूटर समर्थ बना दिया है. इस कारण डिजिटल हिंदी को भी विश्व भर में तथा सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी लोकप्रियता मिल रही है.

हमारे बैंक की प्रत्येक इकाई (शाखा) एक लाभ अर्जन केंद्र होनी चाहिए. शाखा प्रमुख के नेतृत्व में पूरी इकाई को एकजुट होकर काम करना चाहिए और दिए गए सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने की उचित रणनीति तैयार करनी चाहिए. शाखा के कार्मिकों को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए. सभी शाखा प्रमुखों को शाखा के सभी ग्राहकों के आनंद और सुखद अनुभव के लिए प्रयास करना चाहिए.

बैंक ने दिनांक 06.11.23 से 31.12.23 तक ईच वन फेच वन 2.0 अभियान प्रारम्भ किया है. इस अभियान का उद्देश्य सभी कर्मचारियों (सब-स्टाफ/क्लर्क/अधिकारी) का बैंक व्यवसाय में सक्रिय रूप से भाग लेना और रैम (रिटेल, कृषि, एमएसएमई) सेगमेंट से न्यूनतम तीन उत्पादों को हेतु ग्राहक तैयार करने हैं.

प्रत्येक सेन्ट्रलाइट द्वारा समर्पित रुप से किया गया कार्य हमारे प्रिय बैंक के कॉर्पोरेट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निश्चित रूप से परिणाम दायक होगा.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी मुरली कृष्ण)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं. सेन्ट्रल मंथन के माध्यम से सभी सेन्ट्रलाइट से संवाद करना मुझे आनंदित कर रहा है.

मैं सितंबर 2023 मैं बैंक के शानदार परिणामों के लिए अपने प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव के प्रभावी नेतृत्व में आप सभी सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देता हूँ.

देश के पहले पूर्ण स्वदेशी बैंक में कार्य करते हुए आप सभी का ध्यान अपने प्रिय बैंक के व्यवसाय को सर्वोच्च स्तर पर ले जाने की ओर होना चाहिए. सभी अंचल सभी क्षेत्र एवं हमारी सभी शाखाओं में कार्यरत आप सभी को दिए गए सभी व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए. आप अपने कार्यक्षेत्र में उपलब्ध सभी प्रकार की संभावनाओं को वास्तविकता में बदलकर बैंक का व्यवसाय बढ़ाएँ. एक टीम के रूप में मिलजुलकर पूरे तालमेल के साथ काम करें. आप आपके समक्ष उपलब्ध हर अवसर को व्यवसाय में बदलने का प्रयास करें.

आप अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवा प्रदान कीजिए और उन्हें अपने से जोड़े रखें और नए ग्राहक बनाए. इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यवसायिक संस्थाओं को अपने बैंक के साथ जोड़ने का सफल प्रयास अवश्य करें.

ध्यान रखिए, निरंतर प्रयासों को सफलता अवश्य मिलती है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(महेन्द्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं अपने माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव तथा हमारे सभी कार्यपालक निदेशकों के कुशल मार्गदर्शन में विगत तिमाही (सितंबर 2023) में बैंक द्वारा दर्शाए गए शानदार परिणामों के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी सेंट्रलाइट को हार्दिक बधाई देती हूं.

इसके अतिरिक्त मैं भारत सरकार द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए इस वर्ष हमारे बैंक को प्रदान किए गए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए भी आप सबको बधाई देती हूँ.

विगत दिनों हमारे बैंक ने सभी संवर्गों एवं वेतनमानों के लिए पदोन्नति प्रक्रिया प्रारंभ की है. मैं इस पदोन्नति प्रक्रिया में सहभागिता हेतु पात्र सभी सेंट्रलाइट को उनके प्रयासों में पूर्ण सफलता की शुभकामनाएं देती हूं. इसके अतिरिक्त माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव ने आंचलिक एवं क्षेत्रीय स्तर पर पारिवारिक सम्मिलन जैसी नई पहल प्रारंभ की है. साथ ही उन्होंने आंचलिक एवं क्षेत्रीय स्तर पर खेलों के आयोजन के निर्देश भी दिए हैं. मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप सभी इस प्रकार के समस्त आयोजनों में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए उनके उद्देश्य को सार्थक सिद्ध करेंगे.

हम सभी को यह ध्यान में रखना होगा कि बैंक की प्रगति ही बैंक के अस्तित्व का आधार है. बैंक की प्रगति में ही प्रत्येक सेंट्रलाइट की प्रगति निहित है. हमारा बैंक आगे बढ़ेगा तो हम सब भी आगे बढ़ेंगे. इसके लिए आवश्यक है कि हमारी ग्राहक सेवा सर्वश्रेष्ठ हो तथा हमारे ग्राहकों के सभी कार्य तत्परता से संपन्न किये जाएं. यह भी स्मरणीय है कि आप जितने प्यार से ग्राहक सेवा प्रदान करेंगे हमारे ग्राहक उतनी दृढ़ता से आपसे जुड़े रहेंगे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों एवं त्यौहारों की हार्दिक शुभकामनाएं !

ये हमारा परम सौभाग्य है कि आदरणीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव जी के विलक्षण नेतृत्व में हमारे बैंक द्वारा निरंतर उत्कृष्ट कार्य परिणाम दर्शाए जा रहे हैं और भी अधिक प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष हमारे बैंक को भारत सरकार का प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भी प्राप्त हुआ.

निरंतर विकास के क्रम और आज के तकनीकी युग में भारतीय भाषाओं ने कंप्यूटर पर काम करना और भी अधिक सरल कर दिया है. कार्यालयीन कार्यों के अतिरिक्त सोशल मीडिया में भी डिजिटल हिंदी की धूम मची हुई है. आज केवल हिंदी भाषा जानने वाला व्यक्ति भी यूट्यूब, व्हाट्सएप, एक्स (पूर्व में ट्विटर), इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, फेसबुक आदि पर खूब सक्रिय रहते हैं और इसका ही परिणाम है कि आज सभी लैपटॉप, पीसी आदि डिवाइसों में भारतीय भाषाएं इनबिल्ट होती हैं.

यह तो सभी मानते हैं कि भारत में सोशल मीडिया के इन सभी माध्यमों की लोकप्रियता का सबसे प्रमुख कारण डिजिटल हिंदी ही है. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आज डिजिटल हिंदी उपयोग के मामले में सबसे तेजी से बढ़ने वाली भाषा है.

कंप्यूटरीकरण में हो रही त्वरित प्रगति को भी डिजिटल हिंदी उतनी ही तत्परता से आत्मसात कर रही है. डिजिटल हिंदी को लोकप्रिय बनाने में हिंदी प्रेमी वैज्ञानिकों के प्रयास तो सराहनीय है ही साथ ही व्यवसायियों को भी हिंदी की सुविधा वाले गैजेट्स (स्मार्टफोन, टैब, पीसी इत्यादि) बेचने में अपना लाभ दिखाई देता है. प्रसन्नता का विषय यह भी है कि डिजिटल हिंदी (एवं अन्य भारतीय भाषाओं) में कार्य करने की क्षमता वाले गैजेटों की बिक्री लगातार बढ़ रही है. इसका स्पष्ट आशय यह है कि डिजिटल हिंदी का उपयोग तीव्र गति से बढ़ रहा है.

हम भी अपने कार्यों में डिजिटल हिंदी के माध्यम से अपने बैंक के व्यवसाय को बढ़ाने में योगदान प्रदान कर सकते हैं.

शुभकामनाओं सहित,

(राजीव वार्ष्णेय)
सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

मातृभाषाएँ एवं उनके बीच पुल का काम करती हिन्दी

आदिल रहमान
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम

भारत, जिसे अक्सर संस्कृतियों और भाषाओं का 'मेल्टिंग पॉ इंट' कहा जाता है, एक समृद्ध भाषाई विविधता वाला देश है। हमारी तेजी से वैश्वीकृत होती दुनिया में, जहां अंग्रेजी और अन्य प्रमुख भाषाएं अधिक प्रचलित हो रही हैं, किसी की मातृभाषा को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के महत्व को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। देश भर में बोली जाने वाली 1,600 से अधिक भाषाओं के साथ, किसी की मातृभाषा को संरक्षित करने के महत्व को पहचानना आवश्यक है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में मातृभाषा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। यह व्यक्तिगत पहचान, सांस्कृतिक विरासत को आकार देने और विविध समाज के भीतर समावेशिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सांस्कृतिक पहचान:

मातृभाषा के महत्व का एक प्राथमिक कारण सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में इसकी भूमिका है। भाषा संस्कृति का एक अनिवार्य तत्व है, और यह अपने भीतर किसी समुदाय या राष्ट्र के इतिहास, परंपराओं और मूल्यों को समाहित करती है। जब कोई भाषा लुप्त हो जाती है या कम हो जाती है तो उस संस्कृति का एक हिस्सा उसके साथ चला जाता है । किसी की मातृभाषा को संरक्षित करने से उसकी जड़ों से मजबूत संबंध बनाए रखने में मदद मिलती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सांस्कृतिक परंपराएं और विरासत पीढ़ियों से चली आ रही हैं।

ज्ञान संबंधी विकास :

कई वैज्ञानिक शोध से पता चला है कि अपनी मातृभाषा सीखने और बोलने से संज्ञानात्मक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। जो बच्चे अपनी मातृभाषा में पारंगत होते हैं, वे स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करते हैं और उनमें आलोचनात्मक विचार कौशल मजबूत होता है। इसके अलावा, अपनी मातृभाषा में पारंगत होने से उन्हें अन्य भाषाएँ अधिक प्रभावी ढंग से सीखने में मदद मिलती है, क्योंकि उनके पास एक ठोस भाषाई आधार होता है। इसलिए, शिक्षा में मातृभाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने से बेहतर शैक्षणिक परिणाम और संज्ञानात्मक क्षमताओं में वृद्धि हो सकती है।

समावेशिता और सामाजिक एकजुटता:

भाषा सामाजिक अंत:क्रियाओं में या तो एक पुल या बाधा हो सकती है। जब लोगों को अपनी मातृभाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो इससे समुदायों के भीतर अपनेपन और समावेशिता की भावना को बढ़ावा मिलता है। बहुभाषी समाज जो भाषाओं की विविधता का सम्मान करते हैं और उन्हें महत्व देते हैं, वे अक्सर अधिक एकजुट और सामंजस्यपूर्ण होते हैं। दूसरी ओर, अल्पसंख्यक भाषाओं को हाशिए पर रखने या दबाने से सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव हो सकता है।

इस गलत धारणा के विपरीत कि अंग्रेजी जैसी प्रमुख वैश्विक भाषा में दक्षता सफलता की कुंजी है, शोध से पता चलता है कि जो व्यक्ति अपनी मातृभाषा में पारंगत हैं, उन्हें अक्सर अपने करियर में फायदा होता है। वे प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं, सहयोग कर सकते हैं और अपने विचारों को अधिक आत्मविश्वास से व्यक्त कर सकते हैं, जिससे बेहतर नौकरी की संभावनाएं और पेशेवर विकास हो सकता है।

क्या हिन्दी अन्य मातृभाषाओं के लिए खतरा है ?

हिंदी भारत में विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच एक सेतु का काम करती है। यह देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और कई लोगों के लिए सामान्य भाषा के रूप में काम करती है। यह ब्रिजिंग प्रभाव उस देश में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां लोग अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। हिंदी विविध भाषाई पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के बीच संचार को सुविधाजनक बनाने में मदद करती है। इस गलत धारणा के विपरीत कि हिंदी क्षेत्रीय भाषाओं को कमजोर करती

है, यह अक्सर उनके संरक्षण के लिए उत्प्रेरक का काम करती है। भारत में कई राज्यों की अपनी क्षेत्रीय भाषाएँ हैं, और हिंदी के प्रचार से उन्हें कोई खतरा नहीं है। वास्तव में, यह भाषाई पहचान और गौरव की भावना को बढ़ावा दे सकता है, जिससे व्यक्तियों को अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को सीखने और संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

भारत में हिंदी की भूमिका को बहुभाषावाद के प्रचार-प्रसार के पूरक के रूप में देखा जा सकता है। बहुभाषावाद भारत के भाषाई परिदृश्य का एक अनिवार्य पहलू है, और हिंदी अन्य भाषाओं को प्रतिस्थापित करने के बजाय उनके साथ मिलकर इस विविधता में योगदान देती है। कई शहरी केंद्रों में, लोग अक्सर कई भाषाओं में संवाद करते हैं, जो एक समृद्ध भाषाई वातावरण को बढ़ावा देता है।

"अन्य मातृभाषाओं के संरक्षण के साथ हिंदी के प्रचार-प्रसार को संतुलित करना भारत की भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को बनाए रखने की कुंजी है।"

वर्तमान वैश्वीकृत दुनिया में मातृभाषा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। यह खुद को व्यापक दुनिया से अलग करने का मामला नहीं है, बल्कि वैश्विक विविधता में योगदान करते हुए किसी की पहचान, संस्कृति और संज्ञानात्मक विकास को संरक्षित करने का एक साधन है। मातृभाषाओं को अपनाना और उनका पोषण करना व्यक्तियों को सशक्त बनाता है, समुदायों को मजबूत करता है और वैश्विक मानव अनुभव को समृद्ध करता है। इसलिए, यह जरूरी है कि हम मातृभाषाओं के मूल्य को पहचानें और हमारी बढ़ती परस्पर जुड़ी दुनिया में उनके संरक्षण और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाएं।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "सेंट्रल" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

30 सितम्बर-23 को समाप्त तिमाही/छमाही के वित्तीय परिणाम

₹ 6 लाख करोड़ के कुल कारोबार को पार करने के लिए सभी हितधारकों को बधाई

किसी भी तिमाही में अब तक का सबसे अधिक शुद्ध लाभ

₹ 605 करोड़

- बैंक ने लगातार 10वीं तिमाही में स्थायी आधार पर सभी व्यावसायिक मापदंडों में बेहतर प्रदर्शन जारी रखा.
- कुल कारोबार 11.51% बढ़कर **₹ 6,02,284 करोड़** (वित्त वर्ष 24 की दूसरी तिमाही) में हो गया, जबकि ₹ 5,40,130 (वित्त वर्ष 23 की दूसरी तिमाही) में था.
- शुद्ध लाभ वित्तीय वर्ष 23 की दूसरी तिमाही के ₹ 318 करोड़ की तुलना में 90.25% बढ़कर **₹ 605 करोड़** रहा. वहीं पर पिछले वित्त वर्ष की समान छमाही के ₹ 553 करोड़ की तुलना में 85.17% बढ़कर सितंबर छमाही में बढ़कर ₹ 1024 करोड़ रहा.
- सकल अग्रिम वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 17.26% बढ़कर ₹2,31,032 करोड़ हो गया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह ₹1,97,022 करोड़ था.
- वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 505 बीपीएस के सुधार के साथ सकल एनपीए बढ़कर 4.62% (HY23 में 9.67% के मुकाबले) हो गया.
- साल-दर-साल आधार पर 131 बीपीएस के सुधार के साथ शुद्ध एनपीए घटकर 1.64% (2023 की पहली छमाही में 2.95% हो गया).
- प्रावधान कवरेज अनुपात वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 334 बीपीएस के सुधार के साथ 92.54% (2023 की पहली छमही में 89.20 रहा).

www.centralbankofindia.co.in

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डिजिटल हिन्दी

श्री संदीप नारायण सिन्हा
प्रबंधक एवं संकाय सदस्य,
ज्ञानार्जन एवं विकास केन्द्र रायपुर

हिंदी, एक भाषा है जिसका विकास और उपयोग बदलते समय के साथ चरम समृद्धि का अनुभव कर रही है। इसका प्रमुख कारण है डिजिटल दुनिया में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका और उपयोग। आज, हिंदी न केवल भाषा है, बल्कि एक महत्वपूर्ण साधन भी है जिसके माध्यम से डिजिटल जगत में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

पहले, हम बात करेंगे कि हिंदी का डिजिटल दुनिया में क्या महत्व है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, इंटरनेट ने हमारे जीवन को बदल दिया है और यह जहां कुछ क्लिक के साथ जानकारी और संवाद का साधन है, वहीं हिंदी का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। वेबसाइट्स, ऐप्स, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी का विस्तार हुआ है और इसका उपयोग उन लाखों भारतीयों द्वारा किया जा रहा है जो अंग्रेजी में कमजोर हैं। इससे हमारे देश के गांवों और शहरों के लोगों को भी डिजिटल दुनिया का हिस्सा बनने का मौका मिल रहा है और उन्हें विश्व से जोड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

हिंदी का डिजिटल दुनिया में उपयोग करने के कई तरीके हैं। पहले तो, वेबसाइट्स और ऐप्स को हिंदी में तैयार करने से उन्हें अधिक आकर्षक और सुलभ बनाया जा सकता है। वेबसाइटों का हिंदी में अनुवाद करने से विशेषज्ञता और व्यापारिक क्षेत्रों में जानकारी के अधिक स्रोत उपलब्ध होते हैं।

दूसरे, सोशल मीडिया पर हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है, जिससे लोग अपने विचारों को साझा कर सकते हैं। हिंदी में हास्य, वाणी, और साहित्यिक ट्वीट्स के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को आपसी ताकत के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं और सोशल मीडिया के माध्यम से आपसी वाद-विवाद और नैतिक मुद्दों पर चर्चा कर सकते हैं।

तीसरे, डिजिटल माध्यमों के द्वारा हिंदी के माध्यम से शिक्षा का प्रसार किया जा रहा है। वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म्स पर शिक्षा से जुड़े वीडियो, ऑनलाइन कक्षाएं, और वेबसाइट्स हिंदी में उपलब्ध होती हैं, जिससे विद्यार्थियों को अधिक सुविधाजनक और सार्थक शिक्षा मिलती है।

इसके अलावा, हिंदी का उपयोग व्यवसायिक माध्यमों में भी बढ़ रहा है। डिजिटल मार्केटिंग, विपणन, और ऑनलाइन व्यापार के क्षेत्र में भी हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। उदाहरण स्वरूप, वेबसाइट पर हिंदी में विज्ञापन और प्रमोशन व्यवसायों के लिए एक महत्वपूर्ण उपाय है, और इससे व्यापारिक क्रियाओं को बढ़ावा मिलता है।

अंत में, हिंदी का उपयोग डिजिटल दुनिया में भाषा, संवाद, और सांस्कृतिक अभिवादन के रूप में भी किया जा रहा है। हिंदी के माध्यम से व्यक्ति अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान को सजीव रूप में अक्षम होते हैं, और वे अपने जीवन को समृद्धि से भर देते हैं।

इस प्रकार, हिंदी का डिजिटल दुनिया में उपयोग हमारे देश के सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। हिंदी के माध्यम से डिजिटल साक्षरता बढ़ रही है, और यह हमारे देश को ग्लोबल डिजिटल समृद्धि के साथ मिलकर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का माध्यम बन रहा है।

हिंदी दुनिया की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, और भारत में लगभग 50% लोग हिंदी को अपनी मातृभाषा मानते हैं। हाल के वर्षों में, हिंदी का उपयोग डिजिटल दुनिया में तेजी से बढ़ा है।

डिजिटल दुनिया में हिंदी का उपयोग कई तरह से किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, हिंदी में अब कई लोकप्रिय वेबसाइट और ऐप्स उपलब्ध हैं। इनमें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, समाचार और मनोरंजन वेबसाइट, और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म शामिल हैं।

इसके अलावा, हिंदी में अब कई लोकप्रिय डिजिटल डिवाइस और सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, आप अब अपने स्मार्टफोन और कंप्यूटर पर हिंदी भाषा में टाइप और बातचीत कर सकते हैं। आप हिंदी में गेम खेल सकते हैं और फिल्में देख सकते हैं।

हिंदी का उपयोग डिजिटल दुनिया में बढ़ने के कई कारण हैं। सबसे पहले, भारत में इंटरनेट और स्मार्टफोन का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इसका मतलब है कि अधिक से अधिक लोग हिंदी में डिजिटल सामग्री का उपयोग कर रहे हैं।

यह भी है कि डिजिटल कंपनियां हिंदी के बड़े बाजार को नजरअंदाज नहीं कर सकती हैं। इसलिए, वे अपने उत्पादों और सेवाओं को हिंदी में उपलब्ध करा रहे हैं।

ज्ञातव्य हो कि हिंदी में डिजिटल सामग्री बनाने वाले भारतीय निर्माता तेजी से बढ़ रहे हैं। ये निर्माता विभिन्न प्रकार की सामग्री बना रहे हैं, जिसमें शैक्षणिक सामग्री, मनोरंजन सामग्री और समाचार सामग्री शामिल है।

हिंदी के उपयोग से डिजिटल दुनिया में कई लाभ हैं। सबसे पहले, यह अधिक लोगों को डिजिटल दुनिया से जुड़ने की अनुमति देता है। दूसरे, यह हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देता है। तीसरे, यह भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है।

डिजिटल दुनिया में हिंदी के उपयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जैसे जूपजजमत, थ्ंबमइववा, और प्देजंहतंउ, अब हिंदी में उपलब्ध हैं। इन प्लेटफॉर्म पर लाखों हिंदी-भाषी उपयोगकर्ता सक्रिय हैं।
- समाचार और मनोरंजन वेबसाइट, जैसे ठठब् भ्पदकप, छक्ज्ट ज्ञीइंत, और ठवससलूववक भ्नदहंउ, अब हिंदी में उपलब्ध हैं। ये वेबसाइट हिंदी-भाषी उपयोगकर्ताओं को नवीनतम समाचार और मनोरंजन सामग्री प्रदान करती हैं।
- ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, जैसे ।उ्रवद और थ्सपचांतज, अब हिंदी में उपलब्ध हैं। इन प्लेटफॉर्म पर हिंदी-भाषी उपयोगकर्ता हिंदी में उत्पादों को ब्राउज और खरीद सकते हैं।
- डिजिटल डिवाइस और सॉफ्टवेयर, जैसे ॅपदकवूए ।दकतवपक, और पवै, अब हिंदी भाषा का समर्थन करते हैं। हिंदी-भाषी उपयोगकर्ता इन डिवाइस और सॉफ्टवेयर का उपयोग हिंदी भाषा में कर सकते हैं।

डिजिटल दुनिया में हिंदी के उपयोग के भविष्य के बारे में मैं बहुत आशावादी हूँ। मुझे विश्वास है कि हिंदी का उपयोग डिजिटल दुनिया में तेजी से बढ़ेगा। इसका मतलब है कि अधिक से अधिक लोग हिंदी में डिजिटल सामग्री का उपयोग करेंगे। इससे हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा, और भारतीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलेगा।

मैं हिंदी-भाषी उपयोगकर्ताओं से आग्रह करता हूँ कि वे डिजिटल दुनिया में हिंदी का उपयोग करें। यह न केवल उनका अधिकार है, बल्कि यह अपनी मातृभाषा हिंदी और संस्कृति को बढ़ावा देने का एक तरीका भी है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

-भारतेंदु हरिश्चंद्र

डिजिटल हिंदी

संजय राज
सकाय सदस्य/मुख्य प्रबंधक
सर एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई

आज तकनीकी दुनिया में जिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं का जिक्र होता है, उनमें से एक है डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन या तकनीकी कायाकल्प। दुनिया भर के सरकारी तथा निजी संस्थान इस प्रक्रिया को अपनाकर न सिर्फ बेहतर परिणाम प्राप्त कर रहे हैं बल्कि अपने खर्च भी घटा रहे हैं और कामकाज के ढाँचे को ज्यादा कार्यकुशल व सुसंगठित बना रहे हैं. तकनीकी कायाकल्प की यह प्रक्रिया एक समावेशी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य तकनीकी नवोन्मेष के लाभों को हर संगठन तथा हर व्यक्ति तक पहुँचाना है। इस संदर्भ में हमारे लिए भारतीय भाषाओं की भूमिका न सिर्फ महत्वपूर्ण, बल्कि असंदिग्ध है। तकनीकी रूपांतरण की कोई भी प्रक्रिया तभी सार्थक तथा समावेशी हो सकती है जब वह भाषायी, सांस्कृतिक तथा व्यक्तिगत विविधताओं के साथ तालमेल बिठाए।

भारतीय भाषाओं को साथ लिए बिना 'डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन' की प्रक्रिया अपने वास्तविक उद्देश्य को हासिल नहीं कर सकती, और वह वास्तविक उद्देश्य है- निजी, कारोबारी तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल, सुगम, सुसंगठित, तेज और कार्यकुशल बनाना। साथ ही साथ उत्पादकता, गुणवत्ता, लाभप्रदता और किफायत को सुनिश्चित करते हुए डिजिटल-कार्य-संस्कृति को प्रोत्साहित करना।

डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की प्रक्रिया में भारतीय भाषाओं की प्रभावी भागीदारी तभी संभव है जब सभी प्रासंगिक तकनीकों में इन भाषाओं के प्रति मजबूत समर्थन मौजूद हो।

एक अनुमान के अनुसार "यदि इसी तरह पेड़ काटे जाते रहे और नए पेड़ नहीं लगाए गए तो अगले 10-15 वर्षों के बाद हमारे पास पढ़ने-लिखने के लिए कागज नहीं होगा" यदि यह अनुमान सही हो जाए तो हमारी अगली पीढ़ी की पढ़ाई-लिखाई कैसे होगी? यदि ऐसा कुछ नहीं भी हुआ तो जिस गति से कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है, उसमें 10-15 वर्षों के बाद हमारे पढ़ने लिखने की व्यवस्था में कंप्यूटर का क्या योगदान होगा? ऐसे कुछ प्रश्न हैं जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में 'डिजिटल' माध्यमों के जोड़े जाने हेतु हमें प्रेरित करते हैं। ऐसी स्थिति में 'डिजिटल शिक्षण' (Digital Teaching) और 'डिजिटल अधिगम' (Digital Learning) जैसी प्रणालियाँ आज चल पड़ी हैं। भविष्य में उन्हीं समाजों और उन्हीं भाषाओं का अस्तित्व रहेगा जो डिजिटल माध्यमों से अपने-आप को जोड़ सकेंगे। इन्हीं सब बातों को देखते हुए 'हिंदी' को वर्तमान ग्लोबल जगत में मजबूती से स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि 'डिजिटल हिंदी' पर भी हिंदी के शोधकर्ताओं और विद्वानों द्वारा कार्य किया जाए।

'डिजिटल हिंदी' एक व्यापक संकल्पना है। इसमें मुख्य रूप से चार बातों को रखा जा सकता है:

1. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री का विकास

2 डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिंदी शिक्षण

3. डिजिटल हिंदी माध्यम से अन्य विषयों का शिक्षण

4. हिंदी के भाषिक सॉफ्टवेयरों का विकास

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री का विकास:

यह डिजिटल हिंदी का प्राथमिक स्तर या पक्ष है। इसका संबंध किसी भाषा को डिजिटल करने करने से न होकर डिजिटल स्तर पर संपन्न करने से है, जिसका तात्पर्य है डिजिटल रूप में अर्थात कंप्यूटर में उस भाषा की सामग्री का अधिक से अधिक ऑनलाइन और ऑफलाइन विकास करना. सामग्री ऑनलाइन हो तो उसे डाउनलोड करके ऑफलाइन प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार सी.डी. या डी.वी.डी. आदि

माध्यमों से ऑफलाइन सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। आज इस दिशा में हिंदी के लिए अनेकानेक कार्य हो रहे हैं। ये कार्य ऑनलाइन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं जिनका विश्व में कहीं भी और कभी भी उपयोग किया जा सकता है। ऑनलाइन ये वेबसाइट, ब्लॉग, पोर्टल, कोश आदि किसी भी रूप में हो सकते हैं। यह पाठ, चित्र, ऑडियो, विडियो आदि में से किसी भी प्रकार की सामग्री हो सकती है।

इस दृष्टि से हिंदी में बहुत अधिक सामग्री उपलब्ध है जो दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। उदाहरण के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के http://www.hindisamay.com/ को देखा जा सकता है, जिसमें हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं की सामग्री लगभग पाँच लाख पृष्ठों में उपलब्ध है और आगे भी कार्य निरंतर जारी है।

इसीप्रकार http://www.shabdkosh.com/, http://bharatdiscovery.org/india/मुखपृष्ठ, http://kavitakosh.org/kk/कविता_कोश_मुखपृष्ठ, http://www.hindikunj.com/, http://jkhealthworld. com/Hindi/ और हिंदी शब्द-तंत्र (Hindi WorldNet) आदि अनेक स्रोत हैं जहाँ से हिंदी माध्यम से विविध प्रकार की सामग्री को हिंदी में प्राप्त किया जा सकता है।

हिंदी माध्यम से अनेक विषयों पर सूचनाएँ एवं ज्ञान प्राप्त करने के लिए 'हिंदी विकीपीडिया' भी एक उत्तम स्रोत है.

डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिंदी शिक्षण:

हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ हमारी संपर्क भाषा भी है। यह विश्वभाषा बनने की ओर भी प्रयत्नशील है। आज देश-विदेश में हिंदी सीखने वालों की भरमार है। उन सभी को उनकी आवश्यकता के अनुसार शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना हिंदी के शिक्षण प्रतिष्ठानों की जिम्मेदारी है। अभी तक यह सामग्री पाठ्य-पुस्तकों या ई-टेक्स्ट के रूप में उपलब्ध हो सकी है। डिजिटल हिंदी के अंतर्गत हिंदी को एक भाषा के रूप में सीखने वाले सभी विद्यार्थियों और अध्येताओं को सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम के रूप में हिंदी की भाषिक सामग्री उपलब्ध कराई जाए। इस कार्यक्रम को 'डिजिटल हिंदी शिक्षण' नाम दिया जा सकता है। इसे दो आधारों पर देखा जा सकता है-

भाषाक्षेत्र के आधार

हिंदीभाषी क्षेत्र : हिंदीभाषी क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण के लिए एकभाषिक सॉफ्टवेयर प्रयोग में लाए जा सकते हैं। इन सॉफ्टवेयरों में 'हिंदी' शिक्षण की सामग्री भी होगी और माध्यम भी।

हिंदीतर भारतीय भाषा क्षेत्र : इसका तात्पर्य उन भारतीय क्षेत्रों से है जिनकी मातृभाषा या प्रथम भाषा 'हिंदी' नहीं है। इन क्षेत्रों में शिक्षण की सामग्री तो हिंदी होगी, किंतु माध्यम संबंधित क्षेत्र की मातृभाषा या प्रथम भाषा होगी। अत: शिक्षण संबंधी निर्देश और अन्य बातें विद्यार्थियों की अपनी भाषा में होंगी, शिक्षण सामग्री हिंदी होगी। आवश्यकतानुसार उसे भी द्विभाषी किया जा सकेगा।

अन्य देश : भारत के बाहर जिस देश के भी लोग हिंदी सीखते हैं या सीखना चाहते हैं, उन्हें उनकी भाषा में हिंदी शिक्षण की सामग्री सॉफ्टवेयर के रूप में उपलब्ध कराई जा सकती है। अत: इसमें माध्यम के रूप में विदेशी भाषाएँ रहेंगी।

2.2 शैक्षणिक स्तर के आधार पर : इस दृष्टि से भी डिजिटल हिंदी शिक्षण के तीन प्रकार किए जा सकते हैं-

प्राथमिक शिक्षा:प्राथमिक विद्यालयों में कक्ष 1 से कक्षा-5 तक किया जाने वाला शिक्षण इसके अंतर्गत आएगा। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर ही डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करने की पर्याप्त आवश्यकता रहती है, क्योंकि ऑडियो-विजुअल सामग्री और एनिमेशन आदि के माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा मनोरंजक बनाया जा सकता है।

माध्यमिक शिक्षा :माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्ष 6 से कक्षा-8 तक के शिक्षण से है। इस स्तर पर भी हिंदी की सामग्री को डिजिटल रूप में प्रस्तुत कर सॉफ्टवेयर द्वारा शिक्षण किया जा सकता है।

डिजिटल हिंदी के माध्यम से अन्य विषयों का शिक्षण

डिजिटल हिंदी में केवल डिजिटल स्तर पर हिंदी का शिक्षण ही नहीं है, बल्कि हिंदी माध्यम में अन्य विषयों का शिक्षण भी इसमें सम्मिलित है। आरंभ में प्राथमिक स्तर पर एक सॉफ्टवेयर के अंतर्गत सभी विषयों को रखा जा सकता है। बाद में सामग्री बढ़ने के कारण सभी विषयों के अलग-अलग सॉफ्टवेयर बनाकर कक्षा आधारित पैक बनाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए 'डिजिटल हिंदी एक पैक हो सकता है, जिसमें कक्षा-6 के लिए आवश्यक और पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों के अलग-अलग सॉफ्टवेयर एक साथ दिए गए हों। इसी प्रकार अन्य कक्षाओं हेतु सामग्री के पैक भी बनाए जा सकते हैं।

हिंदी के भाषिक सॉफ्टवेयरों का विकास

यह हिंदी को डिजिटल स्तर पर ले जाने की उच्चतम अवस्था है। इसका संबंध हिंदी के लिए और हिंदी से संबंधित सभी प्रकार के सॉफ्टवेयरों के विकास से है। ये सॉफ़्टवेयर भी कई प्रकार के हैं। इन्हें निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है-

टंकण और फॉन्ट का संबंध कंप्यूटर पर हिंदी माध्यम से टंकण करने से है.

और उसका किसी भी कंप्यूटर पर प्रयोग करने से है। इससे संबंधित कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं-

(क) फॉन्ट डिजाइनिंग

(ख) फॉन्ट परिवर्तन

(ग) यूनिकोड तकनीक आदि

डिजिटल हिंदी : संभावनाएँ

वास्तव में 'डिजिटल हिंदी' एक बहुत ही व्यापक संकल्पना है जिसका उद्देश्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हर तरह से हिंदी को अनुप्रयोग और संसाधन हेतु सक्षम बनाना है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से हिंदी का यदि अर्थ और प्रोक्ति स्तर पर भी विश्लेषण कर लिया जाता है, तो मशीन को हिंदी में तर्क करने और निर्णय लेने में भी संक्षम बनाया जा सकेगा। यदि संभव हो पाता है तो हिंदी माध्यम के रोबोट भी विकसित किए जा सकेंगे। यद्यपि इसके लिए शब्दकोशीय स्तर पर एक संरचित निरूपण की आवश्यकता है, जो अभी तक नहीं हो सका है।

नई शिक्षा नीति-2020 में भी भाषा के सवाल को गंभीरता से लिया गया है. भारतीय भाषाओं में ज्ञान निर्माण को प्राथमिकता देने की बात कही गई है. इसमें डिजिटल माध्यमों की बड़ी अहम भूमिका होगी. डिजिटल क्रांति की देन है कि हिंदी तकनीक की भाषा भी बन चुकी है, बहुत सारी ई-कॉमर्स कंपनियों ने हिंदी में ट्रेडिंग आरंभ कर दी है.बड़ी-बड़ी ई- कॉमर्स कंपनियां हिंदी के माध्यम से लोगों को उत्पाद बेच रही हैं. कई कंपनियों ने हिंदी में अपनी सुविधाएँ आरंभ की हैं. फ्लिपकार्ट, अमेज़ॉन जैसी ऑनलाइन कंपनियाँ हिंदी की पुस्तकों के साथ-साथ किंडल जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं की कृतियाँ आसानी से उपलब्ध होने लगी हैं.

गूगल से लेकर दुनिया की तमाम बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिंदी को तरजीह दे रही हैं. इनका मकसद भले ही उपभोक्ता हो पर उससे कहीं न कहीं हिंदी एक वैश्विक ताकत के तौर पर तो मजबूती पा रही है. यही नहीं 2016 में हुए अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव के मतदान पर्ची पर पहली बार हिंदी में मतदाताओं को धन्यवाद का उल्लेख किया गया था. अमेरिका के चुनावी इतिहास में पहली बार अन्य भाषाओं के साथ हिंदी ने अपनी जगह बनाई. यह एक भाषा के बढ़ते दायरे का प्रतीक तो है ही इसके साथ वैश्विक स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता का प्रमाण भी है.

इस डिजिटल युग में अलग-अलग माध्यमों और तकनीकी के जरिए पूरी दुनिया भारतीय नृत्य, संगीत एवं अन्य कलाओं से गहरे रूप में परिचित हो पा रही है. विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत को लेकर लोगों में बड़ी गहरी रुचि है. वहाँ लोग भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ना चाहते हैं और आज दुनिया के तमाम छोटे-बड़े देशों में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का ज़ोर है दुनिया के आर्थिक मानचित्र पर जब उदारीकरण, भूमंडलीकरण के साथ 'ग्लोबल विलेज़' की अवधारणा ने आकार लिया तो उसके बहुत पहले से ही भारतीय ज्ञान व सांस्कृतिक परंपरा के प्रति विश्वभर के लोगों की रुचि रही है. हाँ, यह जरूर है कि तकनीकी और आर्थिक घेराबंदी ने दुनिया में एक-दूसरे तक की पहुँच को आसान बना दिया. आज बहुत कुछ एक क्लिक से जाना जा सकता है. इस बात का सबसे ज्यादा फायदा बाजार ने उठाया है. बाजार ने भाषा और संस्कृति को भी उत्पाद में बदल दिया है लेकिन इन सबके बावजूद हिंदी की ताकत को बाजार और पूरी दुनिया ने माना है. वैश्वीकरण के माहौल में अब हिंदी विदेशी कंपनियों के लिए भी लाभ का जरिया बनने लगी है. वे अपने उत्पादों को बड़ी आबादी तक पहुंचाने के लिए हिंदी को माध्यम बना रहे है।

डिजिटल दौर में हिंदी एक ओर वैश्विक स्तर पर स्थापित हो रही है जिसके कई कारण हैं लेकिन वहीं अपने ही देश में हिंदी को लेकर गंभीर उदासीनता है. इस उदासी को समझे बिना वैश्विक ताकत का हर्ष फीका है. भाषा से संस्कृति का गहरा नाता है. इसलिए यह चिंता सिर्फ भाषा के सवाल तक सीमित नहीं रहती है. इसका दूरगामी प्रभाव है. भाषा का कमजोर होना, समाज एवं संस्कृति का कमजोर होना भी है.

डिजिटल हिंदी एवं मातृभाषा

निखिल जैन
सहायक प्रबंधक-आई टी
क्षेत्रीय कार्यालय पूर्णिया

मातृभाषा के महत्व को समझते हुए डिजिटल हिंदी के विकास का महत्वपूर्ण दिशा देते हुए, हम देखते हैं कि आजकल की पीढ़ियाँ अपनी मातृभाषा को बचपन से ही डिजिटल माध्यमों के माध्यम से सीख रही हैं। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी मातृभाषा हमारी सोच और आभि व्यक्ति करने का माध्यम होती है, और इसे डिजिटल माध्यमों के माध्यम से सीखकर हम अपनी भाषा को एक नए स्तर पर पहुंचा सकते हैं।

डिजिटल हिंदी के विकास में इंटरनेट का अहम योगदान है। आजकल, हम अपने स्मार्टफोन और कंप्यूटर का उपयोग करके हिंदी में विभिन्न जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट पर हिंदी में ब्लॉग, वीडियो, और वेबसाइट्स की ख़ास वृद्धि हुई है, जिससे हम अपनी मातृभाषा में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं।

इसके अलावा, हम अपने समय के साथ हिंदी भाषा के लिए विभिन्न डिजिटल साधनों का भी उपयोग करते हैं। मैसेजिंग ऐप्स, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, और ईमेल हिंदी में आपसी आवद्धि बढ़ाने में मदद करते हैं। यह डिजिटल हिंदी का महत्व बढ़ाता है क्योंकि यह हमारी रोज़मर्रा की जीवनशैली में भी उपयोग हो रही है।

हिंदी डिजिटलीकरण के माध्यम से अपनी मातृभाषा को एक नए स्तर पर पहुंचाने के साथ ही, इसका महत्वपूर्ण योगदान भाषा संरक्षण में भी हो रहा है। यह भाषा की जड़ को नई दिशाओं में ले जा रहा है, और उसे एक ग्लोबल सामाजिक मंच पर प्रस्तुत कर रहा है।

एक महत्वपूर्ण उदाहरण है हिंदी सिनेमा की सफलता। आजकल हिंदी फ़िल्मों की व्यापक उपलब्धता के कारण, यह भाषा विश्व भर में मनोरंजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। इससे हिंदी भाषा का प्रसार हुआ है और उसका विश्व भर में प्रतिष्ठान बढ़ा है।

इसी तरह से, हिंदी डिजिटलीकरण ने हिंदी भाषा के सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके साथ ही, इसने हमारी युवा पीढ़ियों के लिए नौकरी के क्षेत्र में भी एक नया द्वार खोल दिया है। डिजिटल हिंदी का ज्ञान और विशेषज्ञता साइबर सुरक्षा, डिजिटल मार्केटिंग, और वेब डेवलपमेंट में मददगार साबित हो सकता है। यह न केवल भाषा के संरक्षण में मदद करता है, बल्कि नौकरी के अवसरों को भी बढ़ावा देता है।

डिजिटल हिंदी के माध्यम से हम अपनी मातृभाषा को न केवल देश के अंदर, बल्कि विदेशों में भी प्रस्तुत कर सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा हम विदेशी दर्शकों तक अपनी कहानियों, साहित्य, और संस्कृति का प्रचार कर सकते हैं, जिससे हमारी मातृभाषा का विश्व में अधिक प्रतिष्ठान होता है।

इसके अलावा, हिंदी डिजिटलीकरण ने विद्यार्थियों के लिए भी एक सुनहरा मौका प्रदान किया है। अब वे अपने पढ़ाई को डिजिटल साधनों का उपयोग करके और अपनी मातृभाषा में अध्ययन कर सकते हैं। ऑनलाइन सिखाने के साथ ही, उन्हें डिजिटल विशेषज्ञता का भी प्राप्त होता है, जिससे उनके करियर के विकास के अवसर बढ़ जाते हैं।

समर्पितता और आवश्यकताओं के हिसाब से, हिंदी डिजिटलीकरण ने मातृभाषा के सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई है, और यह भाषा की जड़ को नए दिशाओं में ले जा रहा है। इसके साथ ही, यह हमारे युवा पीढ़ियों के लिए नई रोज़मर्रा की जीवनशैली में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का संदेश देता है कि हमारी मातृभाषा के साथ डिजिटल दुनिया में भी कदम रख सकते हैं।

समर्पितता और आवश्यकताओं के हिसाब से, हिंदी डिजिटलीकरण हमारी मातृभाषा के प्रति हमारी जिम्मेदारी को बढ़ा देता है और हमें यह याद दिलाता है कि हमारी भाषा हमारी पहचान का हिस्सा है, और हमें इसका समर्थन करना हमारी जिम्मेदारी है। इससे हम अपनी भाषा, संस्कृति, और भाषा की गरिमा को संरक्षित रख

सकते हैं और उसे एक नए स्तर पर पहुंचा सकते हैं।

मातृभाषा की मान्यता और महत्व को बढ़ाने के लिए डिजिटल हिंदी के तरीके भी महत्वपूर्ण हैं। हमें यह याद दिलाना है कि हमारी मातृभाषा हमारे व्यक्तिगत और सांस्कृतिक आदर्शों का प्रतीक होती है और इसके सहारे ही हम अपनी भाषा और विशेषज्ञता को प्रमोट कर सकते हैं।

डिजिटल हिंदी के माध्यम से हम अपने समाज के अन्य सदस्यों के साथ भी जुड़ सकते हैं। सोशल मीडिया पर हम अपने विचार और विचारों को साझा कर सकते हैं, और इसके माध्यम से हमारी मातृभाषा के प्रति अधिक जागरूकता पैदा कर सकते हैं।

डिजिटल हिंदी के विकास से हम आगे बढ़कर भारत सरकार के “डिजिटल इंडिया” और “मेक इन इंडिया” अभियानों का भी समर्थन करते हैं। यह अभियान हमारे देश को अधिक डिजिटल और तकनीकी दृष्टिकोण से देखने का प्रयास है, और हिंदी डिजिटलीकरण इस अभियान के लिए एक महत्वपूर्ण घड़ी की भूमिका निभा रहा है।

समाप्त करते समय, हम कह सकते हैं कि डिजिटल हिंदी का महत्व बहुत अधिक है, न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि हमारी भाषा, संस्कृति, और भाषा की गरिमा को बढ़ाने के लिए भी। इसके माध्यम से हम अपनी मातृभाषा को नए दर्जे तक पहुंचा सकते हैं और उसे आगे बढ़ा सकते हैं, जिससे हमारे समाज का संवाद और सांस्कृतिक धरोहर मजबूत होता है।

इसलिए, हमें डिजिटल हिंदी के प्रति समर्पित रहना चाहिए, ताकि हम अपनी मातृभाषा को एक नए युग में ले जा सकें और हमारे बच्चों को एक डिजिटल भविष्य की ओर अग्रसर कर सकें। डिजिटल हिंदी हमारी समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इसे आगे बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है।

व्यथा

मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
लगता है आजकल मैं, हो गया हूँ अजर और अमर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
सुबह सुबह जब भी बिस्तर से उठता हूँ
अपने इष्टदेव से रोज ही प्रार्थना करता हूँ
मेरी प्रकृति, मेरी प्रवृत्ति, मेरी आत्मा को दे दो ऐसा वर
कि मुझपर न हो किसी भी बात और डांट का बुरा असर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
लगता है आजकल मै, हो गया हूँ अजर और अमर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
जब भी ऑफिस में पहला कदम रखता हूँ
दिल की धडकनें हो जाती है तेज
स्टाफ की मीटिंग में उनकी समस्याओं को सुनकर
मैं हो जाता हूँ पूर्णरुप से निस्तेज
उसके बाद आती है हमारे अपने कस्टमरों की भीड
जिनकी खट्टी-मीठी तेज-तेज उलाहनो का
सुनकर हो जाता हूँ पसीने से तरबतर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
लगता है आजकल मै, हो गया हूँ अजर और अमर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
ऑफिस की सीट पर बैठते ही
मेरे माथे पर एक टेंशन की मोटी रेखा उभरती है.
आवाज आती है, आज के सारे टारगेट पूरे करने के लिए
अपनी कस लो कमर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
लगता है आजकल मै, हो गया हूँ अजर और अमर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
ऐसी स्थिति को देखकर
मेरी आंखे आंसुओं से जाती है भर
आज की दशा है कुछ ऐसी
या तो काम कर या तो फिर मर
हे भगवान विनती है कि कुछ ऐसा
चमत्कार कर कि सारे सिस्टम जाये सुधर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर
लगता है आजकल मै, हो गया हूँ अजर और अमर
मैं हूँ एक ब्रांच मैनेजर

श्री प्रमोद सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मातृभाषा

दिव्या कुंभरे
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय शहडोल

मातृभाषा का अर्थ:

"मातृभाषा" शब्द का तात्पर्य किसी व्यक्ति की मूल भाषा से है - यानी, जन्म से सीखी गई भाषा। मातृभाषा, किसी भी व्यक्ति की सामाजिक पहचान होती है। मातृभाषा की मदद से केवल क्षेत्रीय भाषाओं के बारे में जानने-समझने में ही सहायता नहीं मिलती बल्कि एक- दूसरे से बातचीत करना भी आसान हो जाता है। दुनियाभर की विभिन्न मातृभाषाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उनके संरक्षण के लिए यूनेस्को द्वारा प्रतिवर्ष 21 फरवरी को 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' मनाया जाता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखा गया है,

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय के सूल"

अर्थात मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। हम मातृभाषा के महत्व को इस रूप में समझ सकते हैं कि अगर हमको पालने वाली, 'माँ' होती है तो हमारी भाषा भी हमारी माँ है। हमको पालने का कार्य हमारी मातृभाषा भी करती है इसलिए भारतेन्दु जी ने 'मां' और 'मातृभाषा' को बराबर का दर्जा प्रदान किया है। हमारे जीवन में सर्वप्रथम हम जिस भाषा का उच्चारण करते हैं, उस भाषा से हमारा पौराणिक संबंध होता है। सभी की अपनी एक खास मातृभाषा होती है, जो जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

शिक्षा में मातृभाषा का महत्व:

शोधों ने यह सिद्ध किया है कि जीवन के आरंभिक वर्षों और प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों में सर्वश्रेष्ठ संवेगात्मक विकास के साथ साथ सभी विषयों की समझ और अधिगम भी बेहतर होते हैं उन बच्चों की तुलना में जिन्हें अपनी मातृभाषा/परिवेश भाषा से अलग किसी भाषा में पढ़ना पड़ता है। इतना ही नहीं, दूसरी भाषाएं सीखने में भी मातृभाषा/परिवेश भाषा में पढ़ने वाले बच्चे आगे पाए गए उन दूसरी श्रेणी के बच्चों की तुलना में। यानी प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा माध्यम शिक्षा बच्चों को बहुभाषी बनाने में भी श्रेष्ठतर साबित होती है। विश्व में विगत 40 वर्षों में लगभग 150 अध्ययनों के निष्कर्ष हैं कि मातृभाषा में ही शिक्षा होनी चाहिए, क्योंकि बालक को माता के गर्भ से ही मातृभाषा के संस्कार प्राप्त होते हैं। भारतीय वैज्ञानिक सी.वी.श्रीनाथ शास्त्री के अनुभव के अनुसार अंग्रेजी माध्यम से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने वाले की तुलना में भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़े छात्र,अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान करते हैं।

लुप्त होती मातृभाषा:

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार हर दो हफ्ते में एक भाषा गायब हो रही है। वर्तमान में दुनियाभर में बोली जाने वाली करीब 6900 भाषाएं हैं और इनमें से 90 प्रतिशत भाषाएं बोलने वाले लोग एक लाख से भी कम हैं लेकिन चिंता की बात यह है कि दुनियाभर में बोली जाने वाली इन 6900 भाषाओं में से करीब 43 फीसदी भाषाएं लुप्तप्राय हैं। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक केवल कुछ सौ भाषाओं को ही शिक्षा प्रणालियों और सार्वजनिक क्षेत्र में जगह मिली है और वैश्विक आबादी के करीब चालीस फीसदी लोगों ने ऐसी भाषा में शिक्षा प्राप्त नहीं की, जिसे वे बोलते अथवा समझते हैं। भाषा की विविधता को विस्तार से जानने के लिए कई देशों ने इस विषय पर मिलकर काम करने का निर्णय लिया है, जिसके तहत एक क्षेत्र का व्यक्ति किसी दूसरे क्षेत्र के व्यक्ति की मातृभाषा को न केवल जान पाएगा बल्कि उसे सीख भी सकेगा।

हमारी मातृभाषा: हिंदी

भारत में हिन्दी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा में से है। 2011 की जनगणना के आधार आज हिन्दी बोलने वालों की संख्या 43.63% है। वहीं अन्य देशों में मंदारिन, स्पेनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी दुनिया में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। आज पीएम मोदी वैश्विक मंचों से हिन्दी भाषा में अपना भाषण दे रहे हैं। पीएम मोदी ने हिन्दी के महत्व पर जोर देते हुए कहा था कि भाषा किसी के मूल्यांकन का आधार नहीं हो सकती। व्यक्ति

के विचार और कर्म से ही उसका मूल्यांकन संभव है।केंद्र सरकार देश की क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने का हर संभव प्रयास कर रही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थानीय भाषाओं के महत्व पर जोर दिया है।

स्वदेशी भाषाओं की रक्षा के लिये भारत की पहल:

सरकार ने "भाषा संगम" कार्यक्रम शुरू किया है, जो छात्रों को अपनी मातृभाषा सहित विभिन्न भाषाओं को सीखने और समझने के लिये प्रोत्साहित करता है। सरकार ने केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान भी स्थापित किया है, जो भारतीय भाषाओं के अनुसंधान और विकास हेतु समर्पित है। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग क्षेत्रीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के प्रकाशन हेतु प्रकाशन अनुदान प्रदान कर रहा है। इसकी स्थापना वर्ष 1961 में सभी भारतीय भाषाओं में तकनीकी शब्दावली विकसित करने के लिये की गई थी। मातृभाषाओं की रक्षा हेतु कई राज्य-स्तरीय पहलें भी हैं। उदाहरण के लिये ओडिशा सरकार ने "अमा घर" कार्यक्रम शुरू किया है, जो आदिवासी बच्चों को आदिवासी भाषाओं में शिक्षा प्रदान करता है। इसके अलावा केरल राज्य सरकार की नमथ बसई पहल आदिवासी क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्थानीय भाषाओं को अपनाकर शिक्षित करने में काफी प्रभावी साबित हुई है

विशेष कथन :

पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम ने स्वयं के अनुभव के आधार पर कहा है कि ''मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की (धरमपेठ कॉलेज नागपुर)।''

पंडित मदन मोहन मालवीय अंग्रेजी के ज्ञाता थे। उनकी अंग्रेजी सुनने अंग्रेज विद्वान भी आते थे। लेकिन उन्होंने कहा था कि ''मैं 60 वर्ष से अंग्रेजी का प्रयोग करता आ रहा हूँ, परन्तु बोलने में हिन्दी जितनी सहजता अंग्रेजी में नहीं आ पाती।

इसी प्रकार विश्व कवि रविन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा है:- ''यदि विज्ञान को जन-सुलभ बनाना है तो मातृभाषा के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए।''

महात्मा गांधी का कथन- "विदेशी माध्यम ने बच्चों की तंत्रिकाओं पर भार डाला है, वह सृजन के लायक नहीं रहे.... विदेशी भाषा ने देशी भाषाओं के विकास को बाधित किया है।"

मातृभाषा और भविष्य:

मातृभाषा सम्पूर्ण देश में सांस्कृतिक और भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रमुख साधन है। महात्मा गाँधी ने मातृभाषा की श्रेष्ठता को समझाते हुए कहा है, मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही जरूरी हैं, जितना की बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध। बालक पहला पाठ अपनी माता से ही पढ़ता है, इसलिए उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा लादना मैं मातृभूमि के विरूद्ध पाप समझता हूँ। भारत का परिपक्व लोकतंत्र, प्राचीन सभ्यता, समृद्ध संस्कृति तथा अनूठा संविधान विश्व भर में एक उच्च स्थान रखता है, उसी तरह भारत की गरिमा एवं गौरव की प्रतीक मातृ भाषाओं को हर कीमत पर विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। अत: मातृभाषा जीवन का आधार है, मातृभाषा जीवन का अहम भाग है,

मातृभाषा से बढ़कर न कुछ है, यही एक दूसरे का विश्वास है,

मातृभाषा को सम्मान देंगे, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे बढ़ावा देंगे,

बोलने में हम खुशी महसूस करेंगे, मातृभाषा से ही दिन की शुरुआत करेंगे।

स्वभाषा प्रेम, स्वदेश प्रेम और स्वावलम्बन आदि ऐसे गुण हैं. जो प्रत्येक मनुष्य में होने चाहिए.

- रामजी लाल शर्मा

डिजिटल हिन्दी

अर्पिता दास गुहो
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय जलपाईगुड़ी

प्रारंभ में जब कंप्यूटर आया था तो कंप्यूटर में अंग्रेजी भाषा का ही वर्चस्व था और यह माना जाता था कि अंग्रेजी के ज्ञान के बिना कंप्यूटर का प्रयोग संभव नहीं है, लेकिन धीरे-धीरे यह सिद्ध हो गया कि अंग्रेजी ही कंप्यूटर के लिए आवश्यक नहीं है. अपनी मातृभाषा की सहायता से भी कंप्यूटर में कुशलता पूर्वक कार्य किया जा सकता है. धीरे-धीरे देशी भाषाओं में काम करने कंप्यूटर के लिये विकास कार्य किए जाने लगे.

हिंदी भाषा का कंप्यूटर पर विकास की दृष्टि से हिंदी भाषा में कंप्यूटर पर कार्य करना आसान बनाने के लिए उचित कदम उठाये गये। भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने भी इस विषय में कई उचित कदम उठाएं.

आज कंप्यूटर और इंटरनेट पर हिंदी भाषा का प्रयोग बेहद सामान्य है. आज हर विषय पर हर तरह की वेबसाइट हिंदी भाषा में उपलब्ध है. हिंदी भाषा में कंप्यूटर पर कार्य करना बेहद आसान हो गया है. हिंदी यूनिकोड फोंट के विकास ने कंप्यूटर पर हिंदी भाषा में टाइपिंग करना भी बेहद सुगम बना दिया है.

अब कोई भी नया कंप्यूटर हो उसमें हिंदी भाषा का कीबोर्ड पहले से ही इंस्टाल होता है। इंटरनेट पर हिंदी भाषा में बड़ी संख्या में काम हो रहा है. हिंदी में काम कर के बहुत से लोग कंप्यूटर और इंटरनेट की सहायता से रोजगार पा रहे हैं. अंग्रेजी के बिना भी कंप्यूटर में हिंदी भाषा में कार्य करके पैसे कमा रहे हैं। इससे कंप्यूटर पर हिंदी का महत्व स्पष्ट हो जाता है. वर्तमान युग में दिन-प्रतिदिन कम्प्यूटर की अहमियत बढ़ती जा रही है. दफ्तर से लेकर स्कूल के क्लासरूम तक कम्प्यूटर की जरूरत महसूस होती है. इंटरनेट के माध्यम से कई ऑनलाइन कार्य कम्प्यूटर पर अलग-अलग भाषाओं में देखने को मिलते हैं. कम्प्यूटर और भाषा दोनों को इस समय एक-दूसरे की जरूरत है. पहले जब कम्प्यूटर नहीं थे तब ऐसा नहीं था लेकिन समय के साथ यह बदलाव आया है.

कम्प्यूटर आने के बाद भाषाओं के लेखन में आसानी हुई है. हालांकि कई नियम ऐसे हैं जिनका पालन कम्प्यूटर पर भाषागत काम के दौरान नहीं हो पाता. देखा जाए तो कम्प्यूटर से भाषा को और आगे बढ़ाने में मदद मिलती है. इस लेख में कम्प्यूटर युग में हिन्दी भाषा के भविष्य और उपयोगिता पर कुछ बातें बताई गई हैं.

कम्प्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से आज हिन्दी की किताबें ऑनलाइन पढ़ने को मिलती हैं लेकिन पूरी तरह से अभी कम्प्यूटर पर हिन्दी का बोलबाला नहीं है. पन्द्रह से ज्यादा सर्च इंजन हिन्दी में हम कम्प्यूटर के माध्यम से देख सकते हैं. यह और अधिक आगे जाने वाला है. अब तो लोकल प्रोडक्ट के लिए विश्व के बड़े ब्रांड भी हिन्दी लेखन से प्रोडक्ट की खासियत बताते हैं. इंटरनेट पर ई-कॉमर्स कम्पनियों ने भी लोकल बाजार के लिए हिन्दी पर ध्यान देना शुरू किया है. लगभग हर ऐप में अब हिन्दी भाषा में जानकारी होती है. सबसे अहम बात डिजिटल मीडिया में हिन्दी भाषा का दबदबा है. यहां कम्प्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल के माध्यम से हर बात हिन्दी में देखने को मिलती है.

हालांकि गूगल पर अब भी 95 फीसदी कंटेंट अँग्रेजी में ही मिलता है जिसे बदलने की जरूरत है. भविष्य में हिन्दी भाषा को लेकर सर्च बढ़ेगा क्योंकि स्थानीय लोगों ने अब कंप्यूटर पर अपनी जिज्ञासा की तलाश शुरू की है. इससे डिजिटल हिन्दी में भी उछाल आएगा. अँग्रेजी से हिन्दी में ट्रांसलेशन का कार्य भी तेजी से आगे बढ़ा है और आने वाले समय में इसमें वृद्धि देखने को मिलेगी. कम्प्यूटर पर हिन्दी का विकास तो हुआ है लेकिन

इसकी रफ्तार काफी धीमी है. आगामी समय में कम्प्यूटर के प्रयोग से हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में और ज्यादा सहयोग मिलेगा.

कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन तथा टैबलेट आदि डिजिटल उपकरण हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। आजकल लगभग इन सभी उपकरणों में हिन्दी में काम करना सम्भव है। भाषाई समर्थन ने तकनीकी विभाजन की दूरी को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यूनिकोड सिस्टम ने हिन्दी को सभी कम्प्यूटिंग डिवाइसों तक पहुँचा दिया है। यूनिकोड सिस्टम के कारण कम्प्यूटर पर हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में काम करना अंग्रेजी जैसा ही सरल हो गया है। इसी कारण अब इंटरनेट पर हिन्दी चिट्ठों तथा वेबसाइटों की भरमार है।

उपयोगिता शब्द से यही समझ में आता है कि किसी वस्तु के उपभोग से जरूरत पूरी होती है. कम्प्यूटर के माध्यम से भी हिन्दी ने काफी लोगों को लाभान्वित होने का मौका दिया है. हिन्दी में शोध करने वाले छात्र-छात्राओं को कम्प्यूटर के माध्यम से हिन्दी भाषा पर कुछ काम करने का मौका मिलता है और यह काम तेजी से आगे बढ़ रहा है. ठीक इस तरह डिजिटल हिन्दी के माध्यम से हर व्यक्ति मन में आए सवालों का समाधान कर सकता है.

हिन्दी की सामग्री सीमित है लेकिन इसे पूरी तरह से विकसित होने में समय लगेगा. ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि कम्प्यूटर के प्रयोग से हिन्दी की पूरी उपयोगिता ही समाप्त हो गई है. किसान से लेकर हर तबके से आने वाला व्यक्ति कम्प्यूटर के युग में हिन्दी भाषा के माध्यम से अपने सवालों का हल निकालने में सफल रहा है और आने वाले समय में यह उपयोगिता और ज्यादा बढ़ेगी.

परोपकार के गीत

परोपकार के गीत जब भी लिखोगे
धरा साथ मे गुनगुनाने लगेगी
जो गीतों से तुम जग की पीड़ा हरोगे
तो ये जिन्दगी मुस्कुराने लगेगी.

निमंत्रण बहारों को मिलने लगेगा
सुमन शांति सुख वाला खिलने लगेगा
अंधेरों मे जब दीप बनकर जले तो
दिशाएं सभी झिलमिलाने लगेगीं.

निराशा को आशा के स्वर मे बदलना
दया त्याग करुणा के रागो मे ढलना
शिखर जब कटीले खुशी से चढ़े तो
चुभन पाव की मन को भाने लगेगी.

भरोसा रखो तुम सदा ही स्वयं पर
रवि की किरण एक भारी है तम पर
हृदय भाव को भानु जैसा रखे तो
भावना भी अमरता को पाने लगेगी.

भावना गुप्ता
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

डिजिटल हिंदी

विकास आनंद
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, गया

वर्तमान समय में भारत विश्व पटल पर एक अग्रणी देश की भूमिका निभा रहा है फिर चाहे वह वित्त का क्षेत्र हो, खेल जगत हो, विज्ञान का क्षेत्र हो या तकनीक का, यह सर्वमान्य हो चुका है कि भारत में विश्व गुरु बनने के वह तमाम गुण मौजूद हैं. इन्हीं क्षेत्रों में से एक क्षेत्र है तकनीक का क्षेत्र.

तकनीक के क्षेत्र में भारत ने नए आयामों को छुआ है. तकनीक के क्षेत्र में नए विकासों ने भारत को ऐसे मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया है कि वह सभी देशों को तकनीक के क्षेत्रों में नित्त नए आयामों को छूने में सहायता प्रदान रहा है । तकनीक का क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जो किसी भी राष्ट्र को गर्त से ऊंचाई पर ले जा सकता है. एवं आविष्कारों को नई दिशाएं दे सकता है, नई जान फूँक सकता है, जीवन को आसान बना सकता है. तकनीक के क्षेत्र के विभिन्न आयाम हैं जिनमें से एक है- डिजिटलीकरण. डिजिटलीकरण का अर्थ होता है- किसी भी प्रकार कि सूचना या दस्तावेज को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने कि प्रक्रिया.आज के युग में डिजिटलीकरण का महत्व काफी बढ़ गया है. हम अपनी सूचना या दस्तावेजों को काफी सहजता से डिजिटल मशीनों या कम्प्यूटर में संग्रहित करके रखते हैं.

जिस प्रकार से डिजिटलीकरण ने सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है समान रूप से इसने हिंदी को भी प्रभावित किया है. इस डिजिटल दौर में तकनीक के विकास के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर साहित्य एवं संस्कृति का विस्तार भी हुआ. इसी विस्तार में हिंदी भाषा ने भी अपनी अलग पहचान बनाई और वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया और एक अलग पहचान कायम की. वर्तमान में दुनिया के अनेक देशों में हिंदी बोली जाती है और उन देशों में हिंदी ने न केवल एक भाषा के रूप में अपनी पहचान बनाई है बल्कि इसने भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, त्योहार आदि की पहचान भी समस्त विश्व से करवाई है. कई लोग इससे प्रभावित होकर हिंदी सीखते हैं. भारतीय पहनावे, नृत्य एवं संगीत को लेकर भी पश्चिमी देशों में बड़ा आकर्षण है.

हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता का सबसे बड़ा कारण है- हिंदी का डिजिटल माध्यम के जरिए विस्तार. डिजिटल माध्यमों में हिंदी की उपस्थिति एक महत्वपूर्ण कारक है कि यह अपने संपूर्ण रूप में प्रचारित एवं प्रसारित हो रही है. माइक्रोसॉफ्ट द्वारा अपने नवीन सॉफ्टवेयर में हिंदी को स्थान देना, सोशल मीडिया, यूट्यूब आदि के जरिए हिंदी की वैश्विक उपस्थिति ने भारत के प्रति लोगों की जिज्ञासा को बढ़ाया और विश्व पटल पर हिंदी को नई पहचान दिलाई है.

यह डिजिटल क्रांति की ही देन है कि हिंदी तकनीक के क्षेत्र में भी अपने पांव जमा चुकी है. अब कई मोबाइल एप्लीकेशन हिंदी को भी स्थान दे रहे हैं, ई-कॉमर्स कंपनियाँ हिंदी भाषा के माध्यम से भी लोगों को उत्पाद बेच रही हैं तो ऑनलाइन कंपनियाँ हिंदी की पुस्तकों के साथ-साथ किंडल पर भी हिंदी की कृतियां उपलब्ध करवा रही हैं. डिजिटल दौर में हिंदी बाजार एवं व्यवहार की भाषा बनती जा रही है. वैश्वीकरण के माहौल में अब हिंदी विदेशी कंपनियों के लिए भी लाभ का जरिया बनने लगी है. इसके माध्यम से वे अपने उत्पादों को बड़ी आबादी तक पहुंचने के लिए हिंदी को माध्यम बना रहे हैं. गूगल से लेकर दुनिया की तमाम बहुराष्ट्रीय कंपनियां हिंदी को तरजीह दे रही हैं, भले ही इनका लक्ष्य अपने ग्राहकों के विस्तार पर हो लेकिन कहीं न कहीं हिंदी डिजिटल माध्यम से एक वैश्विक ताकत के तौर पर भी मजबूती पा रही है. यह हिंदी भाषा के बढ़ते दायरे के प्रतीक के साथ वैश्विक स्तर पर इसकी स्वीकार्यता का प्रमाण भी है.

बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने कर्मचारियों को हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं. इसी प्रकार वैश्विक स्तर पर हिंदी ने डिजिटल युग में अपनी पहचान बनाई है. वर्तमान में हिंदी भाषा सीमाओं से पार लोगों तक पहुंच रही है इसके पीछे डिजिटल माध्यम की भूमिका महत्वपूर्ण रही है.

हिंदी के डिजिटल प्रारूप ने इसके विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. इसके साथ ही इसने समय की बचत की सुविधा भी दी. डिजिटल हिंदी ने हिंदी को भारत के कोने-कोने तक पहुंचने में जिस तेजी से काम किया वह शायद इसके मुद्रित प्रारूप में संभव नहीं हो पाता. एवं इंटरनेट की हर कदम पर उपलब्धता ने भी इसके विस्तार को आसान बनाया. डिजिटल हिंदी लोगों के बीच हिंदी की उपलब्धता का सशक्त माध्यम बन चुका है एवं लोगों ने भी इसे बड़ी सहजता से ग्रहण किया है. आने वाले समय में यह नई ऊंचाइयों को छुएगा एवं हिंदी को विश्व पटल पर चमकाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा.

डिजिटल हिन्दी

सोनाली रजोरे
प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर

परिचय:

- डिजिटल इंडिया भाषिनी भारत का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के नेतृत्व वाला भाषा अनुवाद मंच है.
- एक भाषिनी प्लेटफॉर्म आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) संसाधनों को MSME (मध्यम, लघु और सूक्ष्म उद्यम), स्टार्टअप एवं व्यक्तिगत इनोवेटर्स को सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध कराएगा.
- भाषिनी प्लेटफॉर्म राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन का हिस्सा है.
- इस मिशन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि जैसे-जैसे और अधिक भारतीय इंटरनेट से जुड़ें, वे अपनी भाषाओं में वैश्विक सामग्री का उपयोग करने में सक्षम हों.

♦ महत्त्व:

डिजिटल समावेश:

- यह भारतीय नागरिकों को उनकी अपनी भाषा में देश की डिजिटल पहल से जोड़कर सशक्त करेगा जिससे डिजिटल समावेशन की ओर अग्रसर हो सकें.
- यह स्टार्टअप्स की भागीदारी को भी प्रोत्साहित करेगा.

डिजिटल सरकार:

- मिशन केंद्र/राज्य सरकार की एजेंसियों और स्टार्टअप के पारिस्थितिकी तंत्र की स्थापना व पोषण करेगा, साथ ही भारतीय भाषाओं में नवीन उत्पादों तथा सेवाओं को विकसित एवं स्थापित करने के लिये सहयोग करेगा.
- डिजिटल सरकार के लक्ष्य को साकार करने के लिये यह एक बड़ा कदम है.

भारतीय भाषाओं में विषय-वस्तु का विस्तार:

- इसका उद्देश्य जनहित, विशेष रूप से शासन और नीति, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्रों में इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं में विषय-वस्तु को पर्याप्त रूप से बढ़ाना है ताकि नागरिकों को अपनी भाषा में इंटरनेट का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया जा सके।

डिजिटल इंडिया विज़न के लिये भारत की पहल:

- डिजिटल इंडिया कार्यक्रम: डिजिटल इंडिया का उद्देश्य विकास के नौ स्तंभों जैसे- ब्रॉडबैंड हाइवे, मोबाइल कनेक्टिविटी तक सार्वभौमिक पहुँच, पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम, ई-गवर्नेंस: प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार, ई-क्रांति: सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी, सभी के लिये सूचना, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण, नौकरियों के लिये सूचना प्रौद्योगिकी, अर्ली हार्वेस्ट कार्यक्रम पर बल देता है.
- डिजिटल उद्यमिता: पूरे भारत में 3.7 लाख कॉमन सर्विस सेंटर्स (CSCs) की स्थापना ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल उद्यमिता को प्रोत्साहित किया है और आम आदमी के लिये डिजिटल सेवाओं तक बेहतर पहुँच बनाई है.
- डिजिटल सेवाएँ : ई-अस्पताल, भीम-UPI, ऑनलाइन छात्रवृत्ति, डिजिलॉकर, उमंग एप, ई-कोर्ट, टेली लॉ, ई-वे बिल आदि जैसी डिजिटल सेवाओं के परिणामस्वरूप नागरिकों के लिये जीवनयापन की सुगमता में सुधार हुआ है.
- आधार (UID-Aadhaar): भारत 129 करोड़ आधार धारकों के साथ दुनिया में एक अद्वितीय डिजिटल पहचान के मामले में सबसे बड़ी आबादी वाला देश है.
- इंडिया स्टैक: इंडिया स्टैक 'प्लेटफॉर्म' और 'एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस' (APIs) का एक समूह है, जो सरकारों, व्यवसायों, स्टार्टअप तथा डेवलपर्स को एक अद्वितीय डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर का उपयोग करने की अनुमति देता है ताकि भारतीय समस्याओं को भौतिक उपस्थिति रहित, कागज़ रहित और कैशलेस सेवा वितरण के माध्यम से हल किया जा सके.
- राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला (NDEAR): सरकार ने डिजिटल प्राथमिकता के संदर्भ में एक राष्ट्रीय डिजिटल शैक्षिक वास्तुकला की स्थापना की घोषणा कर शिक्षा के लिये देश के डिजिटल बुनियादी ढाँचे को मज़बूत करने पर अधिक जोर दिया है, जहाँ डिजिटल वास्तुकला न केवल शिक्षण और सीखने की गतिविधियों का समर्थन करेगी बल्कि यह केंद्र एवं राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों की शैक्षिक योजनाओं, प्रशासनिक गतिविधियों का समर्थन करेगी.
- राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (NDHM): इसका उद्देश्य देश के एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचे का समर्थन करने के लिये आवश्यक आधारभूत ढाँचे का विकास करना है.
- डिजिटल इंडिया भाषिनी: यह भारत का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित भाषा अनुवाद मंच है.इसका उद्देश्य इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं में सामग्री को पर्याप्त रूप से बढ़ाना है.

डिजिटल हिन्दी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजीव कुमार शर्मा
प्रबंधक (आईटी),
आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़

हिन्दी केवल भाषा ही नहीं इसे मां का दर्जा भी दिया गया है. बड़े-बड़े साहित्यकारों ने अपनी रचानाओं में हिन्दी को मां कह कर पुकारा है. आज देश ही नहीं पूरी दुनिया जब डिजिटल की राह पर आगे बढ़ रही है तो कहना गलत न होगा कि ऐसे परिवेश में हिन्दी जैसी भाषाओं की व्यापकता और आसान हो गई है. डिजिटल वर्ल्ड में तकनीक के सहारे हिन्दी जैसी भाषाओं को खास प्राथमिकता दी जा रही है. हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दैनिक जागरण से बातचीत में भाषा विशेषज्ञों और शिक्षकों ने अपनी बेबाक राय पेश की, कहा कि आज के दौर में भाषा का विस्तार कठिन नहीं है. जरूरत इस बात की है कि इसके लिए प्रयास सही दिशा में हो. अंग्रेजी को प्राथमिकता देने के चक्कर में रुका हिन्दी का विस्तार डिजिटल की ओर देश बढ़ रहा है यह अच्छी बात है. लेकिन इससे हिन्दी भाषा के विस्तार पर असर पड़ रहा है. क्योंकि आज भी हम अंग्रेजी भाषा के गुलाम बने हुए हैं. डिजिटल वर्ल्ड में भी अंग्रेजी को ही प्राथमिकता दी जाएगी. आज भी हम लोगों की यहीं सोच है कि अगर हम अंग्रेजी बोलेंगे तो हम ज्यादा पढ़े-लिखे माने जाएंगे. ऐसा नहीं है, हिन्दी में बोलने से भी हमारा रुतबा नीचा नहीं होने वाला. जब तक हमारे देश के उच्च संस्थानों में हिन्दी को प्राथमिकता नहीं दी जाएगी, तब तक हिन्दी का आधार मजबूत नहीं हो सकेगा.

आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे हैं. हमारी राष्ट्रभाषा अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है. इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है. हम हमारे ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैं और हम ही अपनी हिन्दी भाषा को वह मान-सम्मान नहीं दे पा रहे हैं, जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासियों के नजर में होने चाहिए. देश का चौथा स्तंभ मीडिया है. देश में अंग्रेजी मीडिया से ज्यादा लोग हिन्दी मीडिया में दिलचस्पी लेते हैं.

हिन्दी भाषा की जो वर्तमान स्थिति है, उसमें जो भी डिजिटल माध्यम है, उसमें किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं है. लेकिन दिक्कत यह है कि लोगों में जागरूकता और जानकारी की कमी है. हमें लगता है कि जो डिजिटल माध्यम है, उसमें हिन्दी का प्रावधान नहीं है. जबकि ऐसा नहीं है. आज हर डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी भाषा उपलब्ध हैं. हिन्दी का प्रयोग करना डिजिटल में बहुत आसान है. राजनीति से लेकर हर क्षेत्र में हिन्दी बोली जाती है. हिन्दी बोलने में हमें गर्व होना चाहिए. जैसी हमारी सोच बन जाती है, वैसा ही हम करते हैं. हमारा हिन्दी दिवस मनाने का उद्देश्य सभी भाषाओं का सम्मान है.

डिजिटल होते देश में हिन्दी की स्थिति बहुत अच्छी हो सकती है, जो पाठ्य सामग्री हमारी पहुंच से दूर होती थी, अब वह सहजता से उपलब्ध होने लगी है. हमारे शास्त्र, ग्रंथ कहीं भी-कभी भी पढ़े जा सकते हैं. हमारी अधिकतम जनसंख्या हिन्दी भाषी है. उन्हें डिजिटलाइजेशन से भाषा का चयन कर अपने दस्तावेज़ जमा करवाना आसान हो गया है. मेरे विचार से हिन्दी का महत्व और अधिक आकर्षण हो गया है.

डिजिटल भारत मुहिम में भी हम अपने कार्य हिन्दी में कर सकते हैं. हां ये बात जरूर है कि कुछ आधुनिक तकनीकों को अपनाने में समस्या जरूर आती है. डिजिटल भारत के सपनों को आगे बढ़ाने के लिए हम हिन्दी में कई कार्य कर सकते हैं. हमारे देश में एक सोच बनी हुई है अंग्रेजी बोलने की. लोग हिन्दी बोलने में शर्म महसूस करते हैं, ऐसा नहीं होने चाहिए. यह हमारी मातृभाषा है, हमें अपने प्रांतीय भाषा को महत्व देने की जरूरत है.

डिजिटल क्रांति की देन है कि हिन्दी तकनीक की भाषा भी बन चुकी है, बहुत सारी ई-कॉमर्स कंपनियों ने हिन्दी में ट्रेडिंग आरंभ कर दी है, बड़ी-बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियां हिन्दी के माध्यम से लोगों को उत्पाद बेच रही हैं. कई कंपनियों ने हिन्दी में अपनी सुविधाएं आरंभ की है. फ्लिपकार्ट, अमेज़ान जैसी ऑनलाइन कंपनियां हिन्दी की पुस्तकों के साथ-साथ किंडल जैसे प्लेटफॉर्म पर हिन्दी समेत अन्य भारतीय भाषाओं की कृतियां आसानी से उपलब्ध होने लगी हैं.

आज हिन्दी का अपना एक वैश्विक बाजार निर्मित हो चुका है. इस वैश्विक बाजार में हिन्दी सबकी जरूरत है. इसलिए बड़ी-बड़ी कंपनियों के मालिक अपने कर्मचारियों को अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी सीखने पर ज़ोर दे रहे हैं. डिजिटल दौर में दुनिया में बाजार और व्यवहार की भाषा हिन्दी बनती जा रही है. आज दुनिया के 40 से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई हो रही है. यह सिर्फ एक भाषा की पढ़ाई नहीं बल्कि भाषा के जरिए भारत की संस्कृति को जानने व समझने का भी अवसर है.

वैश्विक स्तर पर हिन्दी अब व्यापार, रोजगार और पहचान की भाषा बन चुकी है. इस पहचान को मजबूत करने में हिन्दी सिनेमा का भी महत्वपूर्ण योगदान है. एक समय में जैसे देवकी नंदन खत्री के उपन्यासों को पढ़ने के लिए बहुत से उर्दू भाषी लोगों ने हिन्दी सीखी ठीक उसी प्रकार आज देश-विदेश में बहुत से भिन्न-भिन्न, भाषा-भाषी हिन्दी सिनेमा एवं डिजिटल माध्यमों के कारण हिन्दी सीख रहे हैं. भाषा के माध्यम से वह भारत व भारत की संस्कृति से भी परिचित हो रहे हैं. बहुत सी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शाखाएं भारत में भी हैं. वह बेहतर व्यापार के लिए अपने कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिए बकायदा प्रोत्साहित करते हैं. इस तरह डिजिटल युग में हिन्दी की वैश्विक पहचान निर्मित हुई है. आज भाषा सीमाओं से पार, लोगों तक आसानी से पहुंच रही है. इस पहुंचने में डिजिटल माध्यमों की ही भूमिका रही है.

'डिजिटल हिन्दी' एक व्यापक संकल्पना है. इसमें मुख्य रूप से चार बातों को रखा जा सकता है- डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी सामग्री का विकास, डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिन्दी शिक्षण, डिजिटल हिन्दी माध्यम से अन्य विषयों का शिक्षण और हिन्दी के भाषिक सॉफ्टवेयरों का विकास.

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी सामग्री का विकास:

यह डिजिटल हिन्दी का प्राथमिक स्तर या पक्ष है. इसका संबंध किसी भाषा को डिजिटल करने से न होकर डिजिटल स्तर पर संपन्न करने से है, जिसका तात्पर्य है डिजिटल रूप में अर्थात कंप्यूटर में उस भाषा की सामग्री का अधिक-से-अधिक विकास करना. यह दो रूपों में किया जा सकता है- ऑनलाइन और ऑफलाइन. वैसे सामग्री ऑनलाइन हो तो उसे डाउनलोड करके ऑफलाइन प्रयोग किया जा सकता है. इसी प्रकार सी.डी. या डी.वी.डी आदि माध्यमों से ऑफलाइन सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है. आज इस दिशा में हिन्दी के लिए अनेकानेक कार्य हो रहे हैं. ये कार्य ऑनलाइन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं जिनका विश्व में कहीं भी और कभी भी उपयोग किया जा सकता है. ऑनलाइन ये वेबसाइट, ब्लॉग, पोर्टल, कोश आदि किसी भी रूप में हो सकते हैं. यह पाठ, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि में से किसी भी प्रकार की सामग्री हो सकती है.

इस दृष्टि से हिन्दी में बहुत अधिक सामग्री उपलब्ध है जो दिनों-दिन बढ़ती जा रही है. उदाहरण के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का http://www.hindisamay.com/ को देखा जा सकता है, जिसमें हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं की सामग्री लगभग पांच लाख पृष्ठों में उपलब्ध है और आगे भी कार्य निरंतर जारी है. हिन्दी के विविध रचनाकारों को इसमें वर्णानुक्रम में उनके नाम के अनुसार खोजा जा सकता है, अथवा हिन्दी साहित्य के विविध क्षेत्रों के लिए दिए गए टैबों को क्लिक करके भी आवश्यक सामग्री प्राप्त की जा सकती है-

हिन्दी माध्यम से अनेक विषयों पर सूचनाएं एवं ज्ञान प्राप्त करने के लिए 'हिन्दी विकीपीडिया' भी एक उत्तम स्रोत है-

2.0 डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिन्दी शिक्षण

हिन्दी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ हमारी संपर्क भाषा भी है. यह विश्वभाषा बनने की ओर भी प्रयत्नशील है. आज देश-विदेश में हिन्दी सीखने वालों की भरमार है. उन सभी को उनकी आवश्यकता के अनुसार शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना हिन्दी के शिक्षण प्रतिष्ठानों की जिम्मेदारी है. अभी तक यह सामग्री पाठ्य-पुस्तकों या ई-टेक्स्ट के रूप में उपलब्ध हो सकी है. डिजिटल हिन्दी के अंतर्गत हिन्दी को एक भाषा के रूप में सीखने वाले सभी विद्यार्थियों और अध्येताओं को सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम के रूप में हिन्दी की भाषिक सामग्री उपलब्ध कराई जाए. इस कार्यक्रम को 'डिजिटल हिन्दी शिक्षण' नाम दिया जा सकता है. इसे दो आधारों पर देखा जा सकता है-

2.1 भाषाक्षेत्र के आधार पर: इस दृष्टि से डिजिटल हिन्दी शिक्षण के तीन प्रकार किए जा सकते हैं-

प्राथमिक शिक्षा: प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-1 से कक्षा-5 तक किया जाने वाला शिक्षण इसके अंतर्गत आएगा. प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर ही डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करने की पर्याप्त आवश्यकता रहती है, क्योंकि ऑडियो-विजुअल सामग्री और

एनिमेशन आदि के माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा मनोरंजक बनाया जा सकता है.

माध्यमिक शिक्षा: माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा-6 से कक्षा-8 तक के शिक्षण से है. इस स्तर पर भी हिन्दी की सामग्री को डिजिटल रूप में प्रस्तुत कर सॉफ्टवेयर द्वारा शिक्षण किया जा सकता है.

उच्च शिक्षा: इसमें उच्च माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा दोनों समाहित हैं. जैसे-जैसे हम उच्च शिक्षा की ओर बढ़ते हैं, वैसे-वैसे विश्लेषणात्मक और गंभीर सामग्री के निर्माण की आवश्यकता होगी. इसके अलावा उच्च शिक्षा में विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से सोचता है, ऐसी स्थिति में उसके अंदर कुछ बिल्कुल नए प्रश्न उठ सकते हैं. ऑनलाइन प्रश्नोत्तर का माध्यम भी होना चाहिए, जिससे विद्यार्थी विभिन्न विद्वानों और विषय-विशेषज्ञों के साथ अपने प्रश्नों को साझा करके समुचित उत्तर प्राप्त कर सकें.

3.0 डिजिटल हिन्दी के माध्यम से अन्य विषयों का शिक्षण:

डिजिटल हिन्दी में केवल डिजिटल स्तर पर हिन्दी का शिक्षण ही नहीं है, बल्कि हिन्दी माध्यम में अन्य विषयों का शिक्षण भी इसमें सम्मिलित है. आरंभ में प्राथमिक स्तर पर एक सॉफ्टवेयर के अंतर्गत सभी विषयों के अलग-अलग सॉफ्टवेयर बनाकर कक्षा आधारित पैक बनाए जा सकते हैं. उदाहरण के लिए 'डिजिटल हिन्दी:6' एक पैक हो सकता है, जिसमें कक्षा-6 के लिए आवश्यक और पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों के अलग-अलग सॉफ्टवेयर एक साथ दिए गए हों. इसी प्रकार अन्य कक्षाओं हेतु सामग्री के पैक भी बनाए जा सकते हैं.

4.0 हिन्दी के भाषिक सॉफ्टवेयरों का विकास:

यह हिन्दी को डिजिटल स्तर पर ले जाने की उच्चतम अवस्था है. इसका संबंध हिन्दी के लिए और हिन्दी से संबंधित सभी प्रकार के सॉफ्टवेयरों के विकास से है. ये सॉफ्टवेयर भी कई प्रकार के हैं. इन्हें निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है-

4.1 टंकण और फॉन्ट: इनका मुख्य संबंध कंप्यूटर पर हिन्दी माध्यम से टंकण करने और उसका किसी भी कंप्यूटर पर प्रयोग करने से है. इससे संबंधित कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं-

क) फॉन्ट डिजाइनिंग

ख) फॉन्ट परिवर्तन

ग) यूनिकोड तकनीक आदि.

4.2 शोधन: यहां 'शोधन' से तात्पर्य है- किसी टंकित पाठ में आवश्यक सुधार करना. यह सुधार विराम-चिन्ह, वर्तनी, मानक प्रयोग और व्याकरण आदि में होने वाली त्रुटियों के संबंध में हो सकता है. अत: इसके अंतर्गत निम्नलिखित कार्यों से जुड़े सॉफ्टवेयर आते हैं-

(क) विराम चिन्ह सामान्यीकरण संबंधी प्रणाली: ऐसे सॉफ्टवेयर जो विराम-चिन्ह संबंधी त्रुटियों में सुधार करते हैं.

(ख) वर्तनी परीक्षण प्रणाली/वर्तनी जांचक: ऐसे सॉफ्टवेयर जो वर्तनी संबंधी त्रुटियों की पहचान करते हैं और सुझाव प्रस्तुत करते हैं.

(ग) मानक प्रयोग संबंधी प्रणाली: किसी भाषा में लेखन में मानक और अमानक और प्रयोग होने की स्थिति में अमानक प्रयोगों को मानक में परिवर्तित करने वाले सॉफ्टवेयर इस वर्ग में आएंगे.

(घ) व्याकरण परीक्षण प्रणाली/व्याकरण जांचक: व्याकरण संबंधी त्रुटियां होने पर उनका परीक्षण कर सुधार प्रस्तुत करने वाले सॉफ्टवेयर इसके अंतर्गत आते हैं.

5. डिजिटल हिन्दी:संभावनाएं-

वास्तव में 'डिजिटल हिन्दी' एक बहुत ही व्यापक संकल्पना है जिसका उद्देश्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हर तरह से हिन्दी को अनुप्रयोग और संसाधन हेतु सक्षम बनाना है. भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से हिन्दी का यदि अर्थ और प्रोक्ति स्तर पर भी विश्लेषण कर लिया जाता है, तो मशीन को हिन्दी में तर्क करने और निर्णय लेने में भी सक्षम बनाया जा सकेगा. यदि संभव हो पाता है तो हिन्दी माध्यम के रोबोट भी विकसित किए जा सकेंगे. यद्यपि इसके लिए शब्दकोशीय स्तर पर एक संरचित निरूपण की आवश्यकता है, जो अभी तक नहीं हो सका है. किंतु अगले 5-10 वर्षों में निश्चय ही इस दिशा में कोई-न-कोई उल्लेखनीय कार्य आ जाएगा.

इस प्रकार संक्षेप में, 'डिजिटल हिन्दी' के अंतर्गत कंप्यूटर में हिन्दी माध्यम से और हिन्दी से संबंधित डाटा को उपलब्ध कराने से लेकर मशीन को 'हिन्दी' में तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाने तक के सभी कार्य आ जाते हैं. ऑनलाइन आज यह कार्य पर्याप्त मात्रा में हो रहा है. सॉफ्टवेयर द्वारा हिन्दी शिक्षण को 'डिजिटल हिन्दी शिक्षण' नाम दिया जा सकता है. अभी इस दिशा में काम आरंभ हुए हैं. इसी प्रकार भाषिक सॉफ्टवेयरों के निर्माण का कार्य भी विविध स्तरों पर चल रहा है. संरचित निरूपण और तार्किक संजाल निर्माण के क्षेत्र में अभी बहुत अधिक कार्य किए जाने की संभावना है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डिजिटल हिंदी

कुमार सर्वेश
वरिष्ठ प्रबन्धक- सुरक्षा
आंचलिक कार्यालय, भोपाल

मातृभाषा

भाषा वह शक्तिशाली माध्यम है जो मनुष्य और समाज को अपनी संस्कृति के साथ जोड़ती है. उनकी पहचान को गढ़ती है और आपस मे प्रभावी संवाद को संभव बनाती है. यह केवल आपसी संवाद का औज़ार भर ही नही है, अपितु यह किसी राष्ट्र और कौम की संस्कृति, इतिहास तथा पहचान की जीवंत यवनिका चित्र है. मातृभाषा को बहुधा मनुष्य की जन्म लेने के बाद सीखी गई प्रथम भाषा के रूप मे परिभाषित किया जाता है, जिसे वह अपने घर में सीखता है, इसीलिए यह मनुष्यों और समाजों के दिलों मे समान भाव से विशेष स्थान रखती है. करीने से बुनी गई शब्दों की दुनिया के केंद्र मे बसती है मातृभाषा, जो अपनी बारीकियों एवं समृद्ध विरासत के साथ एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को सौंपी जाती है और हमारे स्वत्व मे गहराई के साथ बसी होती है. इस आलेख मे मातृभाषा के महत्व और इसकी सुंदरता सहित इसके विभिन्न आयामों पर चर्चा की जाएगी.

दुनिया भर मे मातृभाषा को इतना महत्व दिये जाने के सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है सांस्कृतिक विरासतों को सहेजने में इसकी भूमिका. भाषा एक ऐसी नाव के समान है जिस पर सवार होकर परम्पराएँ, किंवदंतियाँ, और ऐतिहासिक आख्यान समय के महासागर को पीढ़ी दर पीढ़ी पार करते रहे हैं. जब हम अपनी मातृभाषा में बात करते हैं तो केवल शब्दों का आदान प्रदान ही नहीं करते, अपितु अपने पूर्वजों की कहानियाँ, परम्पराएँ और ज्ञान का संवहन भी करते हैं. मातृभाषा अपने समाज की सांस्कृतिक विविधता और अद्वितीय पहचान को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है.

देखा जाए तो भाषा किसी भी व्यक्ति या समुदाय की पहचान को बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और अपनी जड़ों से जुड़ाव के एहसास को बढ़ावा देती है. अपनी मातृभाषा को बोलने मात्र से ही व्यक्ति सीधे अपनी जड़ों से जुड़ जाता है और आत्मचेतना तथा स्वाभिमान के गहरे भाव से भर जाता है. पुरानी कहावत है कि 'कोई व्यक्ति दूसरी भाषा को कितनी ही गहराई से क्यों न याद कर ले, दिन रात दूसरी भाषा मे बात क्यों न करता रहे, लेकिन चोट लगने पर अपनी भाषा मे ही आवाज़ निकलती है'. अर्थात कोई भी व्यक्ति केवल अपनी मातृभाषा के द्वारा ही अपने विचारों तथा भावनाओं को सबसे ज्यादा सही अर्थ में, सबसे सही तरीके से व्यक्त कर सकता है.

भाषाओं से संबन्धित वैज्ञानिक अध्ययन से पता चला है कि अपनी मातृभाषा मे प्रवीण होने के संज्ञानात्मक एवं भाषायी लाभ हो सकते हैं. मातृभाषा की दक्षता दूसरी भाषाओं को सीखने के लिए आधारभूत ढांचे की तरह काम करती है. यह भाषाओं के ढांचे को गहराई से समझने मे मदद करती है एवं रचनात्मकता तथा समस्याओं के समाधान की योग्यता विकसित करती है. वैश्वीकरण के बाद जहां एक तरफ अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश आदि अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं मे कुशलता की जरूरत बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी तरफ एक समाज, स्थानीय समुदाय या परिवार के अंदर संवाद स्थापित करने के लिए मातृभाषाएँ अभी भी सबसे प्रभावी माध्यम बनी हुई हैं. यह हमारे दिल से निकले हुए भावों को शब्दों मे परिवर्तित करती हैं और हमारे ज्ञान, आदर्श, जीवन मूल्य और भावनाओं को एकदम उपयुक्त शब्दों मे परिवर्तित करके दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाती हैं.

भाषा वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि मातृभाषा में दी गई शिक्षा से सीखने की प्रक्रिया मे उल्लेखनीय वृद्धि होती है. स्कूली शिक्षा पर किए गए शोध यह साबित करते हैं कि जिन विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा दी जाती है वे दूसरों की तुलना मे ज्यादा बेहतर प्रदर्शन करते हैं क्योंकि वे जटिल सिद्धांतों को मातृभाषा में आसानी से समझ लेते हैं और सीखने की प्रक्रिया में ज्यादा प्रभावी ढंग से भाग ले पाते हैं. नवयुगीन कवि चंद्रमोहन रंजीत सिंह के शब्दों में कहें तो -

निज भाषा को भूलना है भारी अज्ञान,
अपनी भाषा सीखिये होगा नित कल्याण .
निज भाषा सीखे बिना क्या जानोगे खास,
समझोगे कैसे भला तुम अपना इतिहास ..

आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो कई समुदायों में मातृभाषा में दक्षता किसी व्यक्ति के आर्थिक एवं सामाजिक समावेशन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है. यह दक्षता उसे स्थानीय समाज तथा अर्थव्यवस्था मे भागीदारी के लिए सक्षम बनाती है तथा हाशिये

पर धकेल दिये जाने के खतरे को कम करती है. साथ ही साथ यह सांस्कृतिक संरक्षण एवं संकटग्रस्त भाषाओं के पुनर्जीवन के लिए अवसर प्रदान करती है.

मातृभाषा के संरक्षण का अर्थ दूसरी भाषाओं के प्रति अस्वीकार्य का भाव नही है, अपितु यह तो बहुभाषिता को प्रोत्साहन है. मातृभाषा मे हासिल किया गया सुदृढ़ आधार दूसरी भाषाओं को सीखने मे सहायता करता है और परस्पर जुड़ी हुई दुनिया में लोगों को सांस्कृतिक एवं भाषाई रूप से ग्रहणीय बनाता है. लोगों का मातृभाषा का आधार जब मजबूत होता है और वे भाषा की संरचना को समझने लगते हैं तो वे दूसरी भाषाओं को सीखने के लिए भी उत्सुक होते हैं. इस सोच को कवि मनोज कुमार झा ने बखूबी इन शब्दों के द्वारा कविता में पिरोया है-

वह भाषा भी सीखूँगा,
जिस भाषा में मेरे नाम का मतलब कुत्ता होता है.
हो सकता है कि उस भाषा मे मेरे दोस्त के नाम का मतलब हंस हो,
न भी हो तो हंस के लिए कोई शब्द तो होगा ही.
कोई शब्द होगा सुंदर के लिए,
कोई शब्द रोटी के लिए
प्यार के लिए
और धरती के लिए.

यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि मातृभाषा एक कलाकृति की तरह होती है. एक बार अपनी मातृभाषा में अच्छी तरह से गढ़े गए किसी एक वाक्य पर विचार करें. सावधानीपूर्वक चुने हुए प्रत्येक शब्द के पीछे पीढ़ियों की अभिव्यक्ति का वज़न होता है. इसमें प्रयुक्त लय, ताल और लहज़ा आपकी भाषा में एक ऐसी धुन का निर्माण करता है जो आपके अस्तित्व को प्रतिध्वनित करता है. भाषा का यही कलात्मक पहलू मातृभाषा की सुंदरता तथा कला का प्रमाण है. मातृभाषा हमारी संस्कृति तथा परंपरा का जीवंत कोश है. इसके शब्दों की दुनिया मे हमारे पूर्वजों की कहानियाँ, पीढ़ियों की बुद्धिमत्ता और हमारे समाज को परिभाषित करने वाले रीतियाँ तथा अनुष्ठान निवास करते हैं. अपनी मातृभाषा के जरिये हम अपनी जड़ों के साथ जुडते हैं और अपनी संस्कृति को, जो हमें वह बनाती है, जो कि आज हम हैं, उसे संरक्षित करते हैं एवं निरंतरता प्रदान करते हैं.

भाषाएँ, विशेष तौर पर मातृभाषा हमें अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को सूक्ष्मतम रूप मे व्यक्त करने की अनुमति देती है. यह हमें एक ऐसा औज़ार प्रदान करती है जिसके जरिये हम अपनी उन भावनाओं को भी सरलता के साथ व्यक्त कर सकते हैं जो किसी और भाषा का प्रयोग करने पर अनकही रह जाती है. मातृभाषा हमें इस योग्य बनाती है कि हम दुख से लेकर सुख तक अपनी भावनाओं की गहराइयों को, अप्रतिम सुंदरता के साथ संप्रेषित कर सकें.

मातृभाषा, जो हम अपने घर में बोलते हैं, अक्सर हमारे अत्यंत अंतरंग और दिल की गहराई से निकले हुए संवादों का निर्माण करती है. यह हमारी दादी, नानी की कहानियों की भाषा है, फुसफुसा कर कान मे बताए गए रहस्यों की भाषा है और दुख या तनाव के वक्त हमें आत्मीयता के साथ ढांढस बंधाने की भाषा है. यही अंतरंगता वह प्यारा सा बंधन है जो हमारे नजदीकी संबंधो को पोषित करता है और उन्हें मजबूती प्रदान करता है.

भाषाएँ संस्कृतियों की तरह ही विविधता से भरपूर होती हैं. प्रत्येक मातृभाषा की अपनी कहावतें, मुहावरे, रूपक, और उपमाएँ होती हैं जो जीवन और सृष्टि के प्रति अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं. इन भाषायी खजानों की खोज करने से हमारे मस्तिष्क को वस्तुओं को देखने और समझने के लिए नए दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं. कभी सोचा है आपने कि मातृभाषा नई और पुरानी पीढ़ियों को जोड़ने वाले पुल का कार्य भी करती है? इस भाषा मे दादा-नाना अपने नाती-पोतों को अपने जीवन से जुड़ी कहानियाँ सुनाते हैं. यह हमसे पहले आने वाले पूर्वजों की आवाज़ को जिंदा रखती है और यह सुनिश्चित करती है कि उनका अनुभव कभी भुलाया न जा सके.

मातृभाषा हमारी संस्कृति, पहचान और परंपराओं की सुंदरता का अद्भुत खजाना है. यह मानवीय अनुभवों की विविधता को दर्शाती है और हमें अपनी जड़ों से जोड़कर रखती है. वैश्वीकरण के इस दौर मे जहां भाषायी विविधता पर खतरा मंडरा रहा है, अपनी मातृभाषा को सहेजना अत्यंत आवश्यक हो गया है. अपनी मातृभाषा की सुंदरता का उत्सव मनाना हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के समान है. मातृभाषा हमारे सांस्कृतिक संरक्षण, स्वतंत्र पहचान के निर्माण और प्रभावी संवाद की स्थापना की दिशा मे रखा गया नींव का पत्थर है. इसके सांस्कृतिक और व्यक्तिगत महत्व से परे जाकर मातृभाषा हमे बोधात्मक, शैक्षिक और आर्थिक लाभ प्रदान करती है. वर्तमान मे जब समाज और देश विविधताओं को गले लगाकर समावेशी समाज के निर्माण का प्रयास कर रहे हैं, इन उद्देश्यों को हासिल करने के लिए मातृभाषा को प्रोत्साहन देना एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है. आधुनिक हिन्दी के स्वनामधन्य कवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र के शब्दों मे-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल.
निज भाषा उन्नति बिना कबहुँ न होइहै सोय.
लाख उपाय अनेक यों भले करे किन कोय.

मातृभाषा: पहचान, संस्कृति और विरासत की सर्वोच्च चाबी

सुश्री अंकिता
सहायक प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक

भाषा, मानव अभिव्यक्ति का सबसे गहरा और जटिल रूप है, जो हमारे संचार की जीवनधारा है, हमारे विचारों और भावनाओं का वाहक है, और हमारे सामूहिक अतीत को खोलने और हमारे भविष्य को आकार देने की कुंजी है.दुनिया भर में बोली जाने वाली भाषाओं में हमारी मातृभाषा का स्थान अद्वितीय और सर्वोच्च है.यह जानकारी संप्रेषित करने का एक उपकरण मात्र नहीं है; यह हमारी पहचान की आधारशिला, हमारी संस्कृति का संरक्षक और हमारी विरासत का पथप्रदर्शक है.इसमें, हम अपनी मातृभाषा के गहन महत्व की व्यापक खोज करते हैं, हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान को आकार देने, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और पीढ़ियों के बीच परंपरा के निर्बाध प्रसारण को सुविधाजनक बनाने में इसकी बहुमुखी भूमिका पर गहराई से विचार करते हैं.इसके अलावा, हम समकालीन वैश्वीकृत दुनिया में मातृ भाषाओं के सामने आने वाली विकट चुनौतियों की जांच करेंगे और उनके संरक्षण और उत्सव के लिए रणनीतियों का प्रस्ताव करेंगे.

इसके मूल में, हमारी मातृभाषा का महत्व हमारे अंतरतम को प्रतिबिंबित करने और हमें हमारी जड़ों से जोड़ने वाले दर्पण के रूप में काम करने की क्षमता में समाहित किया जा सकता है.हमारे शुरुआती क्षणों से, हमारी मातृभाषा वह भाषा है जो हमें घेरे रहती है, वह भाषा जिसमें हमारे माता-पिता प्यार और प्रोत्साहन के अपने पहले शब्द धीरे से फुसफुसाते हैं.यह लोरी ही है जो हमें सोने में सुकून देती है और कहानियां ही हैं जो हमारी कल्पना को जगाती हैं.हमारी मातृभाषा केवल एक भाषाई संरचना नहीं है; यह वह आधार है जिस पर हमारी पहचान आकार लेती है.जो शब्द हम सबसे पहले अपने माता-पिता से सुनते हैं, जो वाक्यांश वे हमारे डर को शांत करने के लिए दोहराते हैं, और जो गीत वे हमारी खुशियों का जश्न मनाने के लिए गाते हैं, वे सभी हमारी आत्म-अवधारणा के ताने-बाने में बुने हुए हैं.यह हमारी मातृभाषा के माध्यम से ही है कि हम सबसे पहले दुनिया का अनुभव करते हैं, और ऐसा करने पर, यह हमारी स्वयं की भावना को गहराई से प्रभावित करती है.हमारी व्यक्तिगत पहचान को आकार देने में अपनी भूमिका से परे, हमारी मातृभाषा हमारी संस्कृति और विरासत का सार है.भाषा और संस्कृति अविभाज्य हैं; वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं.हमारी मातृभाषा उस कुंजी के रूप में कार्य करती है जो हमारी सांस्कृतिक विरासत के खजाने को खोलती है, जो पीढ़ियों से चली आ रही कहानियों, अनुष्ठानों, मूल्यों और परंपराओं को अपने भीतर रखती है.यह हमारी मातृभाषा के माध्यम से ही है कि हम अपने पूर्वजों से जुड़ने के लिए समय और स्थान से परे अपने लोगों की सामूहिक स्मृति तक पहुंचते हैं.चाहे वह महाकाव्य कविताओं का पाठ हो, लोकगीतों का गायन हो, या पैतृक कहानियाँ सुनाना हो, हमारी मातृभाषा वह बर्तन है जो हमारी सांस्कृतिक कथाओं को संरक्षित और प्रसारित करती है.इस प्रकार, यह हमारी सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता सुनिश्चित करता है, उन्हें समय और परिवर्तन की निरंतर गति से बचाता है.इसके अलावा, हमारी मातृभाषा हमें अभिव्यक्ति की अनूठी गहराई और भावनात्मक जुड़ाव प्रदान करती है.यह हमारी मातृभाषा में है कि हम अपने सबसे जटिल विचारों और भावनाओं को सटीकता और बारीकियों के साथ व्यक्त कर सकते हैं.हमारी मातृभाषा के शब्द और मुहावरे हमारे पालन-पोषण के सांस्कृतिक और भावनात्मक संदर्भ से ओत-प्रोत हैं, जो उन्हें हमारी गहरी भावनाओं को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली उपकरण बनाते हैं.चाहे हम ख़ुशी, दु:ख, प्रेम, क्रोध या विस्मय व्यक्त कर रहे हों, हमारी मातृभाषा हमें ऐसा करने की अनुमति देती है, जो कि मात्र शब्दों से भी परे होती है.यह हमारी मातृभाषा के माध्यम से है कि हम इसे साझा करने वालों के साथ गहरे संबंध बनाते हैं, क्योंकि हम न केवल बोले गए शब्दों को समझते हैं बल्कि व्यक्त की गई भावनाओं को भी समझते हैं.

जैसा कि हम अपनी मातृभाषा के सर्वोच्च महत्व की खोज में लगे हैं, आज की वैश्वीकृत दुनिया में इसके संरक्षण की महत्वपूर्ण आवश्यकता को पहचानना आवश्यक है.हमारे ग्रह पर बोली जाने वाली भाषाओं की विविधता आर्थिक दबाव, सांस्कृतिक अस्मिता और वैश्विक मीडिया के व्यापक प्रभाव के कारण खतरे में है.इस चुनौती के सामने मातृभाषाओं का संरक्षण एक अनिवार्य प्रयास बन जाता है.प्रत्येक भाषा एक अद्वितीय विश्वदृष्टिकोण, दुनिया और मानव अनुभव पर एक विशिष्ट दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है.जब एक भाषा लुप्त हो जाती है, तो उसके साथ विचार, संस्कृति और परंपरा का पूरा ब्रह्मांड भी लुप्त हो जाता है.इसलिए, मातृभाषाओं का संरक्षण न केवल सांस्कृतिक संरक्षण का कार्य है, बल्कि भाषाई विविधता के आंतरिक मूल्य की स्वीकृति भी है.

हालाँकि, मातृभाषाओं का संरक्षण चुनौतियों से रहित नहीं है.कई मामलों में, इन भाषाओं में अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक संस्थागत समर्थन और संसाधनों का अभाव है.इसे संबोधित करने के लिए व्यक्तिगत प्रतिबद्धता से लेकर सरकारी नीतियों तक विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जाने चाहिए.प्रमुख राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषा शिक्षा को बढ़ावा देने वाली पहल भाषा संरक्षण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर सकती हैं.शोध से पता चला है कि द्विभाषावाद न केवल मातृभाषाओं को संरक्षित करता है बल्कि संज्ञानात्मक विकास को भी बढ़ाता है, जिससे ऐसे कार्यक्रमों के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन मिलता है.

पहचान में मातृभाषा का महत्व:

हमारी मातृभाषा एक भाषा से कहीं अधिक है; यह हमारी पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है.यह पहली भाषा है जिसका हम सामना करते हैं, जो हमारे शुरुआती विचारों और अनुभवों को आकार देती है.जो शब्द हम सबसे पहले अपने माता-पिता से सुनते हैं, जो कहानियाँ वे हमें सुनाते हैं, और जो गीत वे हमारी मातृभाषा में गाते हैं, वे सभी हमारी आत्म-अवधारणा और पहचान में योगदान करते हैं.यह हमारी जड़ों को प्रतिबिंबित करने और हमें हमारे परिवार और समुदाय से जोड़ने वाले दर्पण के रूप में कार्य करता है.

मातृभाषा और सांस्कृतिक विरासत:

भाषा संस्कृति से अविभाज्य है.हमारी मातृभाषा हमारे लोगों की परंपराओं, मूल्यों और इतिहास को समाहित करते हुए हमारी सांस्कृतिक विरासत का सार समाहित करती है.यह वह माध्यम है जिसके माध्यम से हम प्राचीन मिथकों से लेकर समकालीन साहित्य तक अपने सांस्कृतिक आख्यानों तक पहुँचते हैं.अपनी मातृभाषा बोलने से हम अपनी जड़ों से जुड़ पाते हैं और अपनी सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं.

अभिव्यक्ति की गहराई और भावनात्मक जुड़ाव:

हमारी मातृभाषा अक्सर हमें खुद को गहराई और बारीकियों के साथ अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाती है जिसे दूसरी भाषा में हासिल करना चुनौतीपूर्ण होता है.यह हमारी मातृभाषा में है कि हम खुशी और प्यार से लेकर दुख और क्रोध तक अपनी गहरी भावनाओं को व्यक्त करते हैं.अपनी मातृभाषा के साथ हमारा भावनात्मक संबंध इसे साझा करने वाले अन्य लोगों के साथ अधिक गहन संचार और समझ की सुविधा प्रदान करता है.

भाषाई विविधता का संरक्षण:

कुछ प्रमुख भाषाओं के प्रभुत्व और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण दुनिया में भाषाई विविधता में गिरावट देखी जा रही है.प्रत्येक भाषा एक अद्वितीय विश्वदृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है, और एक भाषा के खोने का अर्थ है दुनिया पर एक विशिष्ट दृष्टिकोण का नुकसान.हमारी वैश्विक सांस्कृतिक टेपेस्ट्री की समृद्धि को बनाए रखने के लिए मातृभाषाओं का संरक्षण आवश्यक है.

मातृभाषा संरक्षण की चुनौतियाँ:

मातृभाषाओं के महत्व के बावजूद, उन्हें आज की दुनिया में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है.आर्थिक दबाव, सांस्कृतिक आत्मसातीकरण और वैश्विक मीडिया के प्रभाव के कारण कई भाषाओं का पतन हुआ है.इस प्रवृत्ति का प्रतिकार करने और मातृभाषाओं के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत प्रतिबद्धता से लेकर सरकारी नीतियों तक विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जाने चाहिए.

मातृभाषा शिक्षा को बढ़ावा देना:

भाषा संरक्षण के लिए मातृभाषा शिक्षा एक सशक्त उपकरण है.स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों को प्रमुख राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करनी चाहिए.यह न केवल भाषा संरक्षण में सहायता करता है बल्कि छात्रों के संज्ञानात्मक विकास को भी बढ़ाता है, क्योंकि

अध्ययनों ने द्विभाषावाद के संज्ञानात्मक लाभों को दिखाया है.

प्रौद्योगिकी और भाषा संरक्षण:

मातृभाषाओं के संरक्षण में प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है.मौखिक परंपराओं को रिकॉर्ड करना और संग्रहीत करना, डिजिटल शब्दकोश और भाषा-शिक्षण ऐप बनाना, और अल्पसंख्यक भाषा बोलने वालों के लिए ऑनलाइन समुदायों को बढ़ावा देना इन भाषाओं को डिजिटल युग में जीवित रखने में मदद कर सकता है.

भाषाई विविधता का जश्न:

मातृभाषाओं को महत्व देने और उनके संरक्षण के लिए भाषाई विविधता का जश्न मनाना महत्वपूर्ण है.अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम, सांस्कृतिक उत्सव और शैक्षिक कार्यक्रम दुनिया की भाषाओं और उनके द्वारा प्रस्तुत विविध दृष्टिकोणों के प्रति सराहना को बढ़ावा दे सकते हैं.

सरकार और नीति की भूमिका:

भाषा संरक्षण प्रयासों का समर्थन करना सरकारों की जिम्मेदारी है.इसमें भाषा पुनरुद्धार कार्यक्रमों को वित्त पोषित करना, भाषा-समावेशी नीतियों को लागू करना और राष्ट्रीय पहचान में भाषाई विविधता के महत्व को पहचानना शामिल हो सकता है.

इसके अलावा, जागरूकता बढ़ाने और मातृभाषाओं को महत्व देने के लिए भाषाई विविधता का जश्न मनाना आवश्यक है.अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम, सांस्कृतिक उत्सव और शैक्षिक कार्यक्रम दुनिया की भाषाओं और उनके द्वारा प्रस्तुत विविध दृष्टिकोणों के प्रति सराहना को बढ़ावा दे सकते हैं.भाषा संरक्षण प्रयासों को समर्थन देने में सरकारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है.इसमें भाषा पुनरुद्धार कार्यक्रमों को वित्त पोषित करना, भाषा-समावेशी नीतियों को लागू करना और राष्ट्रीय पहचान में भाषाई विविधता के महत्व को पहचानना शामिल हो सकता है.

निष्कर्षत:, हमारी मातृभाषा केवल एक भाषा नहीं है; यह सर्वोच्च माध्यम है जिसके माध्यम से हमारी पहचान, संस्कृति और विरासत प्रवाहित होती है.यह हमारे आत्मबोध को आकार देती है, हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है और हमें हमारे पूर्वजों से जोड़ता है.हमारी मातृभाषा हमारी भावनात्मक अभिव्यक्ति को समृद्ध करती है और इसे साझा करने वाले अन्य लोगों के साथ गहरे संबंधों को बढ़ावा देती है.वैश्वीकरण के युग में मातृभाषाओं का संरक्षण और उत्सव अत्यंत आवश्यक है.प्रत्येक भाषा, चाहे कितनी भी अस्पष्ट क्यों न हो, मानव अभिव्यक्ति की वैश्विक पच्चीकारी में योगदान करती है, मानव अनुभव में अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्रदान करती है.अपनी मातृभाषाओं को महत्व और पोषण देकर, हम भाषाई विविधता की समृद्धि का सम्मान करते हैं और उनके द्वारा हमारे भीतर और हमारे बीच बनाए गए गहरे संबंधों की पुष्टि करते हैं.ऐसा करने में, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि दुनिया एक ऐसी जगह बनी रहे जहां हर भाषा की एक आवाज हो और मानवीय अनुभव की दृष्टि में एक अहम भूमिका हो.हमारी मातृभाषा हमारी पहचान, संस्कृति और विरासत का सर्वोच्च अवतार है.यह वह भाषा है जिसमें हमारी कहानियाँ बताई जाती हैं, हमारी परंपराएँ आगे बढ़ती हैं और हमारी भावनाएँ व्यक्त होती हैं.अपनी मातृ भाषाओं का संरक्षण और जश्न मनाना सिर्फ एक कर्तव्य नहीं है बल्कि मानव विविधता की समृद्धि की स्वीकृति है.प्रत्येक भाषा, चाहे कितनी भी अस्पष्ट क्यों न हो, मानव अभिव्यक्ति की वैश्विक पच्चीकारी में योगदान देती है.अपनी मातृभाषाओं को महत्व और पोषण देकर, हम भाषाई विविधता के महत्व की पुष्टि करते हैं और उन गहन संबंधों का सम्मान करते हैं जो वे हमारे भीतर और हमारे बीच बढ़ावा देते हैं.ऐसा करने में, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि दुनिया एक ऐसी जगह बनी रहे जहां हर भाषा की एक आवाज हो और मानवीय अनुभव की टेपेस्ट्री में एक भूमिका हो।

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही गहरा सम्बंध है.

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मातृभाषा

मुक्ता मनी मीना
प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

जिस भाषा में इंसान सबसे पहले बोलना सीखता है वही उसकी मातृभाषा होती है यानी माँ की गोद की भाषा को मातृभाषा कहते हैं.दादी-नानी के द्वारा सुनाई जानी वाली लोरियों की भाषा और बाल्यावस्था के दौरान मित्र समूहों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है.भारतीय संविधान में मात्र 22 भाषाओं का जिक्र है जबकि मात्र छह भाषाओं (तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगू, मलयालम और ओडिया) को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है.हमारे देश की विविधता के कारण ही किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं दिया गया है.भाषा के महत्व को देखते हुए ही वर्ष 1964-66 में कोठारी आयोग ने 'त्रि-भाषा सूत्र' दिया था.

भारत न केवल भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से विविधता को समेटे हुए है बल्कि भाषाई दृष्टिकोण से भी काफी समृद्ध है.वर्ष 1961 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 1652 भाषाएँ थीं.शायद इसीलिए मातृभाषा पर एक कहावत खूब प्रचलित हुई " कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी.लेकिन कभी-कभी लगता है कि वैश्वीकरण ने पहनावा-ओढ़ावा, खान-पान, साहित्य-सिनेमा के साथ-साथ भाषाई तौर पर भी हमें एकरूपता की तरफ जबरदस्ती धकेला है.अंग्रेजी अथवा अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं की वैश्विक पटल पर मौजूदगी किसी से छिपी हुई नहीं है.

वैश्वीकरण ने मातृभाषा के लिए कई चुनौतियाँ खड़ी की हैं.इसमें कोई दो राय नहीं है कि मशीन की भाषा ही आजकल उद्योग जगत को पसंद है.ऑनलाइन युग में अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का बोलबाला है.शोध, अनुसंधान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उन भाषाओं को सबसे ज्यादा तवज्जो दी जा रही है जो मशीन और तकनीक के लिए अनुकूल हैं.नौकरी की भाषा भी मातृभाषा से शिफ्ट होकर अंग्रेजी हो चुकी है.अंग्रेजी से कोई घृणा नहीं है किंतु यदि मातृभाषा में ही नौकरी के कौशल सीख लिए जाए तो कितना अच्छा होगा !

वैश्वीकरण के कारण मातृभाषा पर संकट मंडराने की खबर कोई नयी नहीं है; वर्ष 1961 में भारत में भाषाओं की कुल संख्या आधिकारिक रूप से 1652 थीं लेकिन 1971 में यह घटकर मात्र 808 रह गई.भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण 2013 के आँकड़े को मानें तो पिछले 50 वर्षों में 220 भाषाएँ लुप्त हो गई हैं और 197 भाषाएँ लुप्त होने की कगार पर हैं.व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव, पारंपरिक बसावट में कमी और पूँजीवाद के दौर में रोज़गार के प्रारूप में परिवर्तन ने मातृभाषाओं को पतन की ओर ले गया है.इसके बावजूद यदि मातृभाषा की चमक कायम है तो कुछ तो बात है कि इसकी हस्ती मिटती नहीं है!

मौलिक चिंतन और रचनात्मक लेखन अधिकांशत: मातृभाषा में ही संभव हो पाता है.यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य और सिनेमा आए दिन सुर्खियाँ बटोरते रहते हैं.दरअसल अर्जित भाषाओं में कल्पना करना और उन कल्पनाओं को लिपिबद्ध करना मातृभाषाओं की तुलना में कठिन है.मातृभाषा को लोकभाषा इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि यह जन-जन से सीधे जुड़ी हुई होती है.यह वह धरोहर है जिसका कोई विकल्प नहीं है.मातृभाषा में संवाद स्थापित करके संप्रेषण को प्रभावपूर्ण बनाना कोई नई कला नहीं है.नेल्सन मंडेला कहते हैं कि यदि आप किसी से ऐसी भाषा में बात करें, जो वह समझ सकता है तो वह उसके मस्तिष्क में जाती है.लेकिन यदि आप उसकी अपनी भाषा में बात करते हैं, तो वह सीधे उसके हृदय को छूती है.इसलिए आजकल मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में टीचिंग-लर्निंग पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है.बच्चे जिस भाषा में बचपन को जीता है उसी भाषा में वह पढ़ाई को भी एन्जॉय करेगा.पढ़ाई कोई बोझिल कार्य न लगे इसके लिए मातृभाषा को टीचिंग-लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकारा जा रहा है.

दरअसल भाषा पुल का कार्य करती है; जानकारी, अवधारणा और ज्ञान को एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क में पहुँचाती है.जिस प्रकार यदि पुल मजबूत न हो तो दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है उसी प्रकार यदि भाषा पर पकड़ मजबूत न हो तो विषयों पर मास्टरी हासिल नहीं हो पाती है.अर्थ का अनर्थ तभी होता है जब भाषा पर पकड़ कमजोर होती है.यह सर्वज्ञात है कि सबकी अपनी-अपनी मातृभाषा पर पकड़ मजबूत होती है.इसलिए भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में इसका प्रावधान किया गया है कि प्राथमिक शिक्षा

मातृभाषा में ही दी जाए.इससे बच्चों के सर्वांगीण विकास का रास्ता आसान हो जाएगा.

गौरतलब है कि मातृभाषा में अध्ययन का सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर पड़ता है.पढ़ाई में रूचि, अमूर्त विषयों को मूर्त रूप में तब्दील करने की शक्ति, विषयवस्तुओं को याद रखने की क्षमता, आत्मविश्वास का विकास, कक्षा में विद्यार्थियों की अच्छी उपस्थिति और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का संबंध मातृभाषा से है.विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भी इस बात को स्वीकार किए हैं कि मातृभाषा से ही शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन होगा.

अत: विभिन्न कोशिशों के बाद मातृभाषा को टीचिंग-लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकारा जा रहा है.क्योंकि करके सीखने की प्रक्रिया में मातृभाषा का खूब योगदान है.शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में मातृभाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.मातृभाषा में पढ़ते हुए विद्यार्थियों को कमतर नहीं आँकना चाहिए.तकनीकी शिक्षा भी मातृभाषा में देनी चाहिए.मातृभाषा का विस्तार इंटरनेट की भाषा के रूप में होनी चाहिए.मातृभाषा को सभी विद्यार्थी लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकार करे, इसके लिए मातृभाषा में रोजगार के अवसर भी सृजित होने चाहिए.और शिक्षण के दौरान शिक्षकों को मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में संवाद स्थापित करते हुए हीन भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए.अब तो कुछ इंजीनियरिंग कॉलेज, मैनेजमेंट संस्थान और मेडिकल कॉलेज भी हिंदी में टीचिंग-लर्निंग कार्य कर रहे हैं.

भारत जैसे विशाल उपभोक्ता वाले देश में अब मातृभाषा को संसाधन के रूप में देखा जा रहा है.इंटरनेट की दुनिया से लेकर साहित्य, मनोरंजन और पत्रकारिता की दुनिया तक में लोकभाषा में विभिन्न प्रकार के मौलिक कंटेंट मुहैया कराए जा रहे हैं.कुछ नया कहने, लिखने और दिखाने की भाषा के रूप में जन-जन की भाषा का प्रभावशाली उपयोग हो रहा है.इससे रोजगार के अवसर भी पैदा हो रहे हैं और मातृभाषा का उत्थान भी हो रहा है.क्षेत्रीय भाषाओं के सिनेमा का डंका खूब बज रहा है.अनेकों न्यूज़ चैनल क्षेत्रीय भाषाओं में ग्राउंड रिपोर्टिंग कर रहे हैं.यानी संप्रेषण की असल खुशबू मातृभाषा से आती है.जुड़ाव, लगाव और अपनापन का भाव अपनी ही भाषा में महसूस होता है.

मातृभाषा को टिकाऊ बनाए रखने के लिए इस भाषा में शोध कार्य किए जाने की आवश्यकता है. वैश्वीकरण को अवसर के रूप में देखते हुए मातृभाषा का दरवाजा विज्ञान, कला, शोध, पत्रकारिता, शिक्षा और मनोरंजन के लिए खोल देना चाहिए. ध्यान इस बात का रखना है कि अंतर्राष्ट्रीय भाषा मातृभाषा को कहीं निगल न जाए! हमें अतीत से सचेत होना चाहिए और सधा हुआ कदम बढ़ाकर विभिन्न मातृभाषाओं को विलुप्त होने से बचाना चाहिए.एक भाषा का विलुप्त होना अनेकों बहुमूल्य धरोहरों का विलुप्त होने जैसा है.मानव सभ्यता में विभिन्न प्रकार की विविधताएँ दुनिया को रंग-बिरंगी बनाती हैं.मातृभाषाओं का गायब हो जाना इंद्रधनुष का बेरंग हो जाना है.महात्मा गांधी कहते हैं कि राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा में नहीं बल्कि किसी अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं, वे आत्महत्या करते हैं.इससे उनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है।

तकनीकी शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करके ही शिक्षा को असल में समावेशी बनाया जा सकता है.अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करके जापान, फ्रांस तथा जर्मनी ने विकसित देश का तमगा कैसे हासिल किया यह किसी से छुपा हुआ नहीं है.भारत को अपनी मातृभाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए इन देशों द्वारा अपनाए गए तरीकों और नीतियों से सीखना चाहिए.वैसे आजकल कुछ इंजीनियरिंग कॉलेज, मैनेजमेंट संस्थान और मेडिकल कॉलेज में हिंदी में अध्ययन-अध्यापन शुरू हो गया है.इसका दूरगामी सकारात्मक प्रभाव भविष्य में ज़रूर देखने को मिलेगा.

समय की माँग है कि मातृभाषा का न सिर्फ एक विषय के रूप में प्रचार प्रसार करें बल्कि प्रशासन और न्यायालयों सहित सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में मातृभाषाओं के प्रयोग को प्रोत्साहित करें. दरअसल एक लोकतंत्र के रूप में यह जरूरी है कि शासन में आम नागरिकों की भागीदारी हो.वह तभी होगा जब शासन की भाषा उनकी अपनी मातृभाषा होगी.यदि न्यायपालिका की कार्यवाही भारतीय भाषाओं में होगी तो लोग न्यायपालिका को अपना पक्ष अपनी भाषा में समझा सकेंगे और उसके निर्णयों को पूरी तरह समझ सकेंगे.इससे न्याय तक सबकी पहुँच संभव हो सकेगी.

लोकतंत्र में नागरिकों की भागीदारी, बच्चों का सर्वांगीण विकास, समावेशी शिक्षा और विभिन्न विविधताओं का संरक्षण लोकभाषा से संभव हो सकेगा.लोक भावनाएं, लोक कला, लोक साहित्य और लोक संस्कृति जैसे मुद्दों का सीधा जुड़ाव लोकभाषा यानी मातृभाषा से है.भारत में गुलामी के दौरान से मातृभाषाओं का दमन शुरू हो गया था.अंग्रेजों की नितियाँ भारतीयता को खत्म करने की थी.भारतीयता से यहाँ आशय संस्कार, मौलिकता, मातृभूमि से प्रेम और सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को बनाए रखने से है, इसमें मातृभाषा पुल का कार्य करती है.इसलिए अंग्रेज इस पुल को नेस्तनाबूद करने में डटे रहे.आज़ादी के बाद भी स्थितियाँ बहुत नहीं बदली हैं.एक भारतीय के रूप में यह हमारी असफलता ही है कि हम अपनी मातृभाषाओं को शासन, प्रशासन और राष्ट्रीय जीवन में उचित स्थान न दिला पाए.भारतीय भाषाओं को रोजगार और आजीविका से जोड़कर मातृभाषा को ताकत दे सकते हैं.

डिजिटल हिन्दी

श्री विद्याधर पेडणेकर
उप क्षेत्रीय प्रमुख
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

हिंदी भाषा जो भारत में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा में से एक है, यह दुनिया में बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर है. संविधान द्वारा भारत में हिन्दी को राजभाषा के रुप में 14 सितम्बर, 1949 को अपनाया गया. हिन्दी भाषा पढने, लिखने और समझने में बहुत ही सरल है. कोई भी हिन्दुस्तानी जहाँ भी हो, दूसरे हिन्दुस्तानी से हिन्दी भाषा के जरिए ही अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है. अपनी मन की बात अगर किसी भाषा में सहजता से की जा सकती है तो वह हिन्दी ही है. आज देश का शायद ही ऐसा कोई हिस्सा हो जहाँ हिन्दी सहजता से बोली या समझी ना जाती हो. हिन्दी हमारी केवल मातृभाषा या राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि यह राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव का प्रतीक है.

आज का दौर डिजिटल का दौर है. भारत सरकार की एक पहल है जिसके तहत सरकारी कार्यालयों को देश की जनता के साथ जोडना है. उनका उद्देश्य यही है कि सरकारी सेवाएँ इलेक्ट्रॉनिक रुप से जनता तक पहुँच जाए. आज डिजिटल युग में, हिन्दी स्वयं को और मजबूती से स्थापित कर रही है. आज हिंदी को बढ़ावा देने और आगे ले जाने के लिए किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह की आवश्यकता नहीं है. बल्कि आज हिंदी भाषा को टेक्नोलॉजी से सुसज्जित युवाओं द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है. हिंदी में जितनी सृजन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है शायद उतनी किसी और भाषा में नहीं हो सकती है. खासकर यूनिकोड फॉन्ट आने के बाद लोगों के लिए हिंदी में लिखना और पढ़ना और सहज हो गया है. बैंकिंग में भी डिजिटल हिन्दी का प्रयोग बडे पैमाने पर हो रहा है. नई तकनीक हमारे जीवन के हर पहलू में प्रवेश करके प्रौद्योगिकी ने हमारे व्यवहार और संचालन के तरीके को बदल दिया है. संचार और परिवहन से लेकर स्वास्थ्य देखभाल और कनेक्टिविटी तक डिजिटल हिन्दी से हमारे जीवन को बेहतर बनाना है. आज बहुत सारे एप्स हिन्दी में विकसित किए जा रहे हैं. ग्रामीण भागों में किसानों के लिए कई सरकारी योजनाएँ सरकार ने शुरु की है. यह सभी योजनाएँ हिन्दी में एप्स द्वारा किसानों तक पहुँचाई जा रही है, ताकि उनका फायदा तथा महत्व सरलता से लिया जा सके.

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है.

- महात्मा गांधी

डिजिटल क्रांति के युग में हिंदी का दायरा और बढ़ा है. पहले अखबार, पत्रिकाएं, टीवी, सिनेमा, काव्य गोष्ठियां और साहित्य सम्मेलन ही हिंदी के प्रचार-प्रसार के बड़े माध्यम थे. लेकिन अब फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और ब्लॉग भी हिंदी को समृद्ध बनाने के सशक्त माध्यम बनकर उभरे हैं. हिंदी में जितनी सृजन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है शायद उतनी किसी और भाषा में नहीं हो सकती है. इससे पहले सोशल मीडिया में लोग हिंदी भी रोमन लिपि में लिखा करते थे. लेकिन यूनीकोड फॉन्ट आने के बाद हिन्दी में लिखने तथा पढने में वृद्धि हुई है. यही कारण है कि डिजिटल क्रांति के इस स्वर्णिम दौर में नई पीढ़ी का हिंदी के प्रति रुझान बढ़ा है. हिंदी अब केवल आम बोलचाल और साहित्यिक भाषा नहीं रह गई है, बल्कि विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी फलफूल रही है. कोरोना काल में हिंदी साहित्यकारों और कवियों को श्रोताओं से जुड़ने में सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. योगनगरी के साहित्यकार सोशल मीडिया पर हिंदी के वर्चस्व को एक क्रांति के तौर पर देख रहे हैं. वहीं विचार विनिमय के आभाषी मंचों से जुड़े आम लोग भी अपनी भाषा पर गर्व कर रहे हैं. सोशल मीडिया हिंदी के लिए बहुत सकारात्मक पहलू बन गया है. हिंदी के प्रति नई पीढ़ी में रुझान बढ़ा है. फेसबुक, व्हाट्सएप और ट्विटर पर युवाओं की हिंदी में लिखी गई अभिव्यक्ति और टिप्पणियों को पढ़कर मन में बड़ी प्रसन्नता होती है. सोशल मीडिया पर जो स्वदेशी भाषा में प्रचार प्रसार हो रहा है उससे हिंदी को संबल मिला है. अंग्रेजी अंतरराष्ट्रीय भाषा है. लेकिन हिंदी हमारे अस्तित्व की पहचान है. सरकार की अनुकूलता के चलते सोशल मीडिया पर हिंदी को बढ़ावा मिल रहा

है. एक बार फिर हिंदी का स्वर्णिम दौर वापस लौट रहा है. हिंदी के प्रति देश में चेतना पैदा हो रही है. सोशल मीडिया का इसमें बड़ा योगदान है. नई पीढ़ी सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय रहती है. ऐसे में अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम की मनोवृति उनका हिंदी के प्रयोग को लेकर रुझान बढ़ा है. पहले अखबारों, समाचार चैनलों, रेडियो और टीवी ने हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.अब सोशल मीडिया भी यही काम कर रहा है. हालांकि सोशल मीडिया पर वर्तनी की अशुद्धियों को लेकर सुधार की जरूरत है.

डिजिटल क्रांति की देन है कि हिंदी तकनीक की भाषा भी बन चुकी है, बहुत सारी ई-कॉमर्स कंपनियों ने हिंदी में ट्रेडिंग आरंभ कर दी है.बड़ी-बड़ी ई- कॉमर्स कंपनियां हिंदी के माध्यम से लोगों को उत्पाद बेच रही हैं. कई कंपनियों ने हिंदी में अपनी सुविधाएँ आरंभ की हैं. फ्लिपकार्ट, अमेज़ॉन जैसी ऑनलाइन कंपनियाँ हिंदी की पुस्तकों के साथ-साथ किंडल जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं की कृतियाँ आसानी से उपलब्ध होने लगी हैं.

सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा का उपयोग :

आज के समय में बड़े पैमाने में युवा इंटरनेट पर हिंदी कंटेंट पेश कर रहे हैं. इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है. फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तेजी से हिंदी का उपयोग हो रहा है. यूनिकोड ने हिंदी भाषा को और बढ़िया ऊंचाई दी है वर्तमान में बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी अपने विज्ञापनों में हिंदी भाषा का प्रयोग करें कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें यह बात अच्छे से पता है कि बिना हिंदी के मार्केट में बने रहना संभव नहीं है. क्योंकि विश्व की बड़ी आबादी हिंदी भाषा का उपयोग करती है और हिंदी भाषा बोलने में जितना सरल है उतना ही समझने में सुलभ है, इसलिए डिजिटल मार्केटिंग के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है. डिजिटल हिन्दीआत्म अभिव्यक्ति के लिए मंच तथा व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रभाव के अवसर प्रदान करता है. नई तकनीक को अपनाने से व्यक्तियों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुचने, दूसरों से जुडने और अपने जीवन और आसपास की दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने में सशक्त बनाया जा सकता है.

हिंदी भाषा में लॉन्च होने वाले ऐप

हिंदी भाषा की लोकप्रियता दिनोंदिन बाजार और सोशल मीडिया में तेजी से बढ़ रही है और हिंदी की बढ़ती मजबूती को देखते हुए अमेजॉन, क्विकर, ओएलएक्स जैसे बड़े इकॉमर्स प्लेटफॉर्म ने अपने ऐप का हिंदी वर्जन लॉन्च किया है. हिंदी भाषी लोगों के द्वारा तेजी से उपयोग किया जा रहे यूट्यूब, सफलता, गूगल जैसे मजबूत ऐप हिंदी में यूजर्स के लिए कंटेंट ला रहे हैं जो उन्हें उंचाईयों की अगली स्तर पर ले जा रही है. आज के डिजिटल के दौर में युवा पीढी द्वारा हिन्दी के एप्स को बढावा मिल रहा है.

डिजिटल इंडिया की कुछ योजनाएँ निम्नानुसार है.

1. ब्रॉडबैंड हाईवे
2. पब्लिक इंटरनेट
3. जानकारी
4. फर्स्ट हार्वेस्ट
5. मोबाइल
6. रोजगार
7. इ-क्रांति
8. इ-गवर्नेस
9. आत्मनिर्भर

रास्ता साफ़

सलमान खान
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली

रास्ता साफ़ था, मै अपने घर जा रहा था सामने देखा मेरे पड़ोस में रहने वाली "जूनो" रास्ता पार कर रही थी कि अचानक सामने से आ रही गाडी ने उसे टक्कर मार दी, वो कितनी दूर गिरी उस गाड़ी वाले ने ये भी न देखा और तो और तेज़ गति से गाडी बढ़ा दी. मै उसके पास गया तो देखा के वो अपनी अंतिम साँसे ले रही थी और मेरी तरफ देख कर जैसे कह रही हो मेरे बच्चो का ख्याल रखना उनका इस दुनिया में मेरे सिवा कोई नहीं. मेरी आँखों भर आयीं, एक आंसू गिरा और उसने दम तोड़ दिया. मेरा जूनो को जानना और मेरे ही सामने उसका दम तोडना मुझे अन्दर से हिला गया. जब हम किसी की चाह कर भी मदद न कर पाए, तो हमे लगता है हमने जितना आज तक पाया है सब व्यर्थ है. खैर दिन बीता रस्मे हुई और घरवालो ने उसे दफना दिया.

खाली बैठ कर सोचता रहा गलती किसकी थी कभी कभी खाली रास्ते भी हमे तेज़ चलने के लिए आकर्षित करते है, उसे देखकर रास्ता पार करना चाहिए था पर वो भी कैसे देखती, उसे भी तो समझ नहीं थी. मै जूनो के बच्चो से मिलने जा ही रहा था कि फ़ोन की घंटी बजती है, पता चलता है कि देश में लॉकडाउन लगा दिया गया है. रात में खरीददारी भी करना मुश्किल हो गयी. फ़ोन पर अपने दोस्त से बात करके किसी तरह कल का कुछ सामान खरीद कर जूनो के बच्चो के लिये दे आया जूनो के बच्चे बहुत छोटे थे देख कर दिल भावुक हो गया. सोचा घर ले आऊ पर लॉक डाउन के लगते ही लोग एक दुसरे को बीमार नज़र आने लगे.

1 सप्ताह तक तो सब ठीक रहा, लोगो ने घर पर अच्छी अच्छी चीजो का आनंद लेना शुरू कर दिया. फिर उसके बाद पता चलने लगा कितने लोग भूखे सो रहे है सिर्फ 1-2 टाइम का ही खाना खा कर किसी तरह लॉक डाउन के हटने इंतज़ार कर रहे है. मेरे आस पास के कई घरो में जहा बच्चो का शोर शराबा होता था अब वहाँ खामोशी छाई हुई है. मैंने दूर से देख कर पता किया, मालूम हुआ कि जो लोग आर्थिक रूप से कमज़ोर थे उनके पास खाने को ज़यादा कुछ बचा नहीं है. सभी लोग बस 21 दिन पूरे होने का इंतज़ार कर रहे है. जब ये हटे तो कुछ ठीक से खाने को मिले.

करीब 15 दिन बाद, मै किसी काम से अपने मामा के घर आया, पर यहाँ पर तो उसी दिन पुलिस का काफी कडा रुख हो गया था किसी को अपने घर निकलने की इजाज़त भी नहीं थी क्योंकि वहाँ पर 1 कोरोना का मरीज़ मिल गया था इसलिए पूरा क्षेत्र सील कर दिया गया था.

15 दिन बाद वहा से क्वारंटाइन हटा, मैंने जल्दी से अपने घर का रुख किया तो पता चला कि 1 सप्ताह पहले जूनो के बच्चो की मौत हो गयी है सिर्फ 1 बच्चा बचा है, मै घरवालो को मना कर उसे अपने घर ले आया, मैंने उसका नाम भी जूनो रखा, मेरे घरवाले बिल्ली के प्यारे से बच्चे को देख कर बहुत खुश थे पर अन्दर ही अन्दर मुझे अपने असहाय होने का भी एहसास हो रहा था क्योंकि मै जूनो के सारे बच्चो को बचा नहीं पाया. मेरे अन्दर एक अलग सी भावना पैदा हो रही थी जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी.

जिस तरह मनुष्य को खाने पीने की और प्यार की ज़रूरत होती है उसी तरह जानवरों को भी होती है. मेरा आप सभी से निवेदन है कि अपने आप पास के जानवरों और पक्षियों की जब भी थोड़ा वक़्त मिले तो ज़रूर मदद करें, क्योंकि ये किसी के द्वारा की गयी मदद को कभी नहीं भूलते हैं.

क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली 'मध्य' क्षेत्राधीन पलवल शाखा को नराकास द्वारा वर्ष 2022-23 में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

नराकास से क्षेत्रीय कार्यालय विजयवाड़ा को वर्ष 2022-23 का उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

हैदराबाद अंचलाधीन एवं गुंटूर क्षेत्राधीन शाखा नेल्लोर को नराकास की ओर से राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त.

क्षेत्रीय कार्यालय विजयवाड़ा के क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस एस मूर्ति को नराकास के संयोजन में आयोजित 'चित्र देखो कहानी लेखन' प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्रीय प्रमुख.

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य) भोपाल के कार्यालयाध्यक्ष द्वारा दिनांक 20.09.2023 को हमारी मुख्य शाखा, सिविक सेंटर, भिलाई (छत्तीसगढ़) का राजभाषा संबंधी निरीक्षण सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ.

नराकास (बैंक एवं बीमा) द्वारा आंचलिक कार्यालय, पटना को वर्ष, 2022-23 के लिए राजभाषा 'प्रथम पुरस्कार' नराकास, पटना के अध्यक्ष सह क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक, श्री संजीव दयाल के कर-कमलों से प्राप्त करते हुए, अंचल प्रमुख, श्री डी पी खुराना.

दिनांक 29.08.2023 को नराकास, वर्ष 2022-23 में के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय मुज़फ़्फ़रपुर को 'प्रथम पुरस्कार' स्वरूप शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या को नराकास की ओर से श्री छबिल कुमार मेहेर, उपनिदेशक कार्यान्वयन एवं नराकास अध्यक्ष द्वारा 'प्रथम पुरस्कार'. क्षेत्रीय प्रमुख श्री ऋषि सारस्वत ने प्राप्त किया.

हैदराबाद अंचलाधीन एवं गुंटूर क्षेत्राधीन शाखा करनूल को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नराकास की ओर से 'तृतीय' पुरस्कार उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री अनिर्बान कुमार विश्वास तथा नराकास अध्यक्ष ने प्रदान किया.

हैदराबाद अंचलाधीन एवं गुंटूर क्षेत्राधीन शाखा अनंतपुर को राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन हेतु नराकास की ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री अनिर्बान विश्वास तथा नराकास अध्यक्ष ने प्रदान किया.

बैंक नराकास की बैठक में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु हमारे क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. चित्र में पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्रीय प्रमुख श्री आरके सिंह एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा चंद्रकांत जैन.

बैंक नराकास रायपुर की 54वीं बैठक में रायपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा तैयार हिंदी पोस्टर का विमोचन किया गया.

जामनगर नराकास द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय जामनगर को राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

दिनांक 25 जुलाई 2023 को आयोजित नराकास बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया.

नराकास बड़ौदा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सेमिनार में श्रीमति सुष्मिता भट्टाचार्य उपनिदेशक भारत सरकार गृह मंत्रालय और बैंको के उच्च प्रबंधतंत्र के द्वारा वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा श्री अर्पण वाजपेयी, आंचलिक कार्यालय अहमदाबाद को उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति पर सम्मानित किया गया.

भोपाल अंचलाधीन इंदौर क्षेत्र की देवास शाखा को नराकास द्वारा विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

दिनांक 11.08.2023 को नराकास (बैंक), गुवाहाटी की बैठक के दौरान नराकास (बैंक) गुवाहाटी द्वारा पूरे उत्तर-पूर्व में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

नराकास राँची के तत्वावधान में आयोजित छमाही बैठक में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय राँची को वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक द्वारा दिनांक- 21.07.2023 को आदरणीय उप आँचलिक प्रमुख, पुरुषोत्तम मीणा श्री आर. एन. स्यन्दोलिया सेवानिवृत्त महा प्रबंधक, क्षेत्रीय प्रमुख, रोहतक श्री अजय दुआ के करकमलों से राजभाषा पोस्टर का विमोचन किया गया.

दिनांक 25.09.2023 को न.रा.का.स.दक्षिण गोवा द्वारा वास्को शाखा को उत्कृष्ट राजभाषा कार्य निष्पादन के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए शाखा प्रबंधक श्री महालिंगप्पा मुधोल व राजभाषा अधिकारी डॉ. सुमेध हाडके.

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा कोटा, जयपुर एवं ठाणे क्षेत्रीय कार्यालयों का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण किया गया. कुछ झलकियां

माननीय सांसदों का स्वागत करती हुई महाप्रबंधक राजभाषा, सुश्री पॉपी शर्मा.

क्षेत्रीय कार्यालय ठाणे का निरीक्षण करते हुए माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के पश्चात प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय ठाणे द्वारा तैयार हिंदी पोस्टर का विमोचन करते हुए माननीय सांसदगण.

निरीक्षण करते हुए माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के पश्चात क्षेत्रीय प्रमुख कोटा को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के पश्चात क्षेत्रीय प्रमुख जयपुर को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए माननीय सांसदगण.

निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय कोटा एवं जयपुर द्वारा तैयार हिंदी पोस्टर का विमोचन करते हुए माननीय सांसदगण.

चटपटा पोहे वडा

लीना भूषण शेवड़े
वरिष्ठ प्रबंधक, अनुपालन विभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुम्बई

साहित्य :

- 1 कप पोहा,
- 1 कप उबले आलू,
- छोटा टुकड़ा अदरक,
- 1 हरी मिर्ची,
- हरा धनिया,
- 1/4 चम्मच हल्दी पावडर,
- 1/4 लाल मिर्च पावडर,
- 1 चम्मच गरम मसाला,
- 1/2 चम्मच धनिया पावडर, स्वादानुसार नमक,
- 2 कप तेल

कृति :

पोहे को पानी से धो कर अच्छे से निथार लें. एक बाउल में आलू लेकर मसले, उसमें अदरक मिर्च का पेस्ट, हल्दी पावडर, धनिया पावडर, लाल मिर्च पावडर, गरम मसाला और स्वादानुसार नमक मिलाय. यह मिश्रण पोहे में मिलकर फिर से मसले और उसमे ताजा धनिया बारीक़ काटकर मिला ले. अब इस मिश्रण से वडे बनाकर उसे तेल में तलकर गरम गरम परोसे.

टिप्स :

वड़ों को धीमी आंच पर तलना है. इसे लहसुन चटनी अथवा टोमेटो सॉस अथवा शेजवान सॉस के साथ परोसिये. बच्चों के लिए इस पर चीज किसकर भी सर्व कर सकते है.

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

www.centralbankofindia.co.in